संकल्प

संकल्प / संस्करण १२० / २०२३ / अंक ३ / दिसम्बर

Welham Boys' School

ज़रा सोचिए

दृढ़ संकल्प से दुविधा की सभी बेड़ियाँ कट जाती हैं
और विघ्न विपत्तियां रास्तों से स्वयं हट जाती हैं।

–अज्ञात

अनुक्रमणिका

1.	सम्पादकीय	1
2.	आध्यात्मिक घटनाओं का काल्पनिक वर्णन : सही या गलत	2
3.	अंतिम प्रलय	2
4.	इस्राइल फिलिस्तीन संघर्ष : शांति के लिए संघर्ष	3
5.	मूवी रिव्यू : मिशन रानीगंज	4
6.	ई-स्पोर्ट्स का उदय	5
7.	नए छात्र की क़लम से	6
8.	ओलीफैंट के मुख्य संपादक की क़लम से	7
9.	भारत का विकास	8
10.	सत्र के आखिरी दिन आसान नहीं	8
11.	क्लब : एक अनोखा अनुभव	9
12.	उद्देश्य की लौ	10
13.	विद्यालय की राजनीति	11
14.	आशाओं की पतंग	11
15.	ॐ समस्त सत्य के संवाहक-ईश्वर	12
16.	मोटोजीपी : रफ्तार का रोमांच	13
17.	युद्ध समस्याओं का समाधान नहीं	14
18.	पलों की बात	15
19.	अगली वोटिंग	15
20.	विज्ञापनों से भरी दुनिया	15
21.	सोशल मीडिया	16
22.	छात्रों की पसंद देश या विदेश	16
23.	फार्मूला वन	17
24.		18
25.	एशियन गेम्स	18
26.	न हों परेशान आगे की सोच-सोच कर	19
27.	क्या बच्चों पर पढ़ाई का बोझ बढ़ता जा रहा है	19
28.	मूवी रिव्यू : 12वीं फेल	20
29.	अगले साल किसकी सरकार	21
30.	देश का नाम : भारत या इंडिया	21
31.	गरीब किसानों से बातचीत के बाद मेरे विचार	22
32.	कविता	22
33.	आसमान के ऊपर भारत का नाम	22
34.	तालों में नैनीताल.....	23

सम्पादकीय

बिमर्श कुमार शम्भूनाथ झा
सम्पादक

सम्पादकीय

"रगों में दौड़ते फिरने के हम नहीं कायल / जब आँख ही से न टपका तो फिर लहू क्या है!"

– मिर्जा गालिब

एक आखिरी लेख। कुछ अंतिम शब्द। अलविदा। सालों से अपने इस दूसरे घर में अपनी कलम से भावों को रूप देते हुए सदैव यह लगता था कि अगली बार कुछ और लिखा जाएगा। सपना था अपना पहला सम्पादकीय लिखने का। आज महसूस होता है कि पाँच वर्षों की इस दास्तान में कभी यह न सोचा था कि आखिर अपना अंतिम सम्पादकीय भी लिखना होगा। आखिर हूँ तो मैं बस एक फनकार। अपने दु:ख, दर्द व खुशियों के फूलों को शब्दों के गुलदस्तों में भरता एक बागवान। आज मेरी कलम कुछ रुकती सी नज़र आती है। शायद इसलिए कि इसमें आज केवल स्याही नहीं, आँसू भी हैं और उन आँसुओं में मुझे नज़र आता है उस 13 वर्ष के बिमर्श का प्रतिबिम्ब।

झलकती उसकी आँखों में उम्मीद और चाह। पूछता है वह मुझसे 'क्या ये आँसू खुशी के हैं, अपने सपने हासिल करने के। दु:ख के हैं, या अधूरे सपने छोड़ कर जाने के।' सालों से वाद-विवाद करता व गीत गाता हुआ मैं उसके आगे मौन सा पाता हूँ खुद को।अपनी इस दास्तान को याद करूँ तो मिर्ज़ा ग़ालिब के शेर से दिखाई पड़ते हैं। जब बात आती है उन अनगिनत रातों कि जो लिखते हुए, छुपछुप के कावेरी सदन के पैखाने में गाने व बोलने का रियाज करते हुए काटी है तो याद आता है शेर–

'चिपक रहा है बदन पर लहू से पैराहन / हमारी जेब को अब हाजिते रफु क्या है?'

और इसी के बाद जब मुस्कुराते हुए याद करता हूँ वो पल, वो प्रधानाचार्या महोदया से बैज लेना, उनसे जीते अवार्ड लेना, वो गाने के बाद तालियों की गूँज और उससे कई ज़्यादा कीमती अध्यापकों का आशीर्वाद, तो याद आते हैं –

'जला है जिस्म जहाँ, दिल भी जल गया होगा / अब कुरेदते हो राख़, जुस्तजु क्या है।'

आख़िर, मैं एक रास्ता नहीं तो क्या हूँ? हिन्दी की महान सांस्कृतिक व साहित्यिक सम्पदा को अगर मैं एक चौथी कक्षा के छात्र को इस कदर से समझा पाया, तो इससे ज़्यादा मैं और क्या माँगू। परन्तु भावों में बहकर भी यह कलम रुकती नहीं। इसमें विश्वास है मेरे गुरु मुरलीधर जोशी जी का, जिन्होंने मेरी गलतियों के बावजूद मेरा साथ नहीं छोड़ा। आशीर्वाद मेरी माँ का, जिनके पथ पर चलकर मैंने कलम उठाई। आशा मेरे संपादक मंडल की मुझपर, इस भाषा पर, हमारी महान संस्कृति पर। उम्मीद मेरे उन हम सफर की जो वाद-विवाद में मिले हों, परंतु मेरी ढाल बनकर खड़े रहे।

हमारी प्रधानाचार्या के मार्गदर्शन का जिसके कारण मैं अंधेरों से बचता रहा। मन करता है आज लिखता रहूँ। न छपने दूँ अपना आखिरी लेख, न जाऊँ यह घर छोड़ कर, फिर वही आठवीं का छात्र बन जाऊँ। परंतु फिर याद आता है अपना संपादकीय –'एक संकल्प उनका था, एक संकल्प मेरा है'

मेरा संकल्प यहाँ खत्म नहीं होगा। यह छात्र, यह कलम हमेशा मेरे साथ रहेगी। आज नमन करता हूँ इस हाथी को, जो खींच लाया मुझे इतनी दूर।

अलविदा। प्रणाम

एक छोटा सा लेखक, भाषा का सेवक

सस्नेह

बिमर्श कुमार शम्भूनाथ झा
मुख्य सम्पादक

आध्यात्मिक घटनाओं का काल्पनिक वर्णनः
सही या गलत

सभी को अभिनंदन। मैं 11वीं कक्षा से गर्वित मिश्रा हूँ और मैं इस लेख के शीर्षक में पूछे गए प्रश्न का उत्तर दूँगा। यह प्रश्न उन सभी लेखकों पर लागू होता है जिन्होंने पौराणिक कथाओं या आध्यात्मिकता पर आधारित काल्पनिक किताबें लिखी हैं। या लिख रहे हैं। शुरुआत करने से पहले मैं हर किसी के विचारों में अंतर को स्वीकार करना चाहूँगा और सूचित करना चाहूँगा कि यहाँ जो कुछ भी मैं व्यक्त कर रहा हूँ वह मेरी राय है और उसका किसी भी तरह से तथ्यात्मक रूप से सही होना अनिवार्य नहीं है।

आज हम सैकड़ों किताबें जंगल की आग समान दुनिया भर में फैलती हुई देखते हैं, जिनमें से कुछ पौराणिक कथाएँ भी हैं। यह कुछ लोगों के लिए आश्चर्य की बात है कि भारत में अक्षत गुप्ता और अमीश त्रिपाठी जैसे लेखकों को उनकी कृतियों पर अधिक विवाद का सामना नहीं करना पड़ता है। मेरी राय में ऐसा इसलिए होता है ये लेखक आध्यात्मिक/पौराणिक कथाओं को इस हद तक काल्पनिक बनाते हैं कि इन कहानियों का सबसे महत्वपूर्ण तत्व– आश्चर्य इन किताबों के पन्नों के बीच खो जाता है। ऐसी गतिविधियाँ करना उतना ही प्रासंगिक है जितना अपना पसीना सुखाने के लिए धूप में बैठना। यहां तक कि पाठक भी अंततः भूल जाते हैं कि इन पुस्तकों का क्या मतलब है और जैसे–जैसे पन्ने पलटते हैं, आश्चर्य और भव्यता का सारा सार खो जाता है। जब आप इसे मेरी दृष्टि से देखते हैं तो यह सब एक मनोवैज्ञानिक रणनीति लगती है।

अंत में, मैं यह घोषणा करते हुए अपने शब्दों को यहीं विराम देता हूं कि मेरी राय में, लेखकों को आध्यात्मिक घटनाओं को काल्पनिक बनाने की अनुमति बिल्कुल नहीं दी जानी चाहिए, मैं ऐसी कदमों के खिलाफ हूं और किसी भी मूर्खतापूर्ण गलती के लिए अपने मनपसंद लेखकों के भी खिलाफ हूँ।

– गर्वित मिश्रा

XI

अंतिम प्रलय

ओ मुसाफिर, एक बार वह नेत्र तो खोलो,
अपनी खिड़की खोल, देख लो दर्पण
ओ अजनबी, एक बार दो शब्द तो बोलो
क्योंकि जीवन बीत गया और प्रकट हुआ है मरण।

तुमने टहल तो लिया और देखी सपनों की माया,
अब ओ वीर योद्धा, देख तो लो रात का अंधकार।
जब लालच का राज बसा, तब बनी छल की छाया
अगर लहू–ताल बह रहा है, तो तुम भी उठाओ तलवार।

युद्ध बसा हे मनुष्य के सीने में परंतु न कोई दिल,
जब अन्याय हुआ तो चुप बैठे और करते रहे इन्तज़ार
अब जब रणभूमि में जंग छिड़ी,
ओ वीर योद्धा उठाओ अपने हथियार और न करो विचार।

अंत में जब संसार बिखर गया और अंत हुआ प्रकट
एक छोटी सी प्रातःकाल की आशा रही अटूट
क्योंकि जब सत्यानाश और प्रलय आ गया,
तब एक नये विश्व का निर्माण रहा सकता कितना दूर।

– कौस्तुभ गुप्ता

IX-C

इस्राइल फिलिस्तीन युद्ध : शांति के लिए संघर्ष

इस्राइल फिलिस्तीन संघर्ष एक गहरी जड़ो वाला और जटिल विवाद है जो एक सदी से भी अधिक समय से फैला हुआ है। यह चल रहा संघर्ष क्षेत्रीय विवादों, ऐतिहासिक शिकायतों और प्रतिस्पर्धी राष्ट्रवादी आंदोलनों के इर्द-गिर्द घूमता है। संघर्ष का इतिहास हिंसा, शांति वार्ता और समाधान की आशाओं के चक्रों से चिंहित है।

यह संघर्ष 20वीं सदी की शुरुआत में शुरु हुआ, जब यहूदी अप्रवासी फिलिस्तीन में पहुँचने लगे, जो उस समय ओटोमन साम्राज्य का हिस्सा था। उन्होंने धीरे-धीरे फिलिस्तीनियों को उनकी जमीन से बेदखल कर वहाँ कब्ज़ा करना शुरु कर दिया। गाज़ा पर इस समय हमास का शासन है, जो एक हथियारबंद समूह है और इस्राइल से फिलिस्तीन को आज़ाद कराने के लिए प्रतिबद्ध है। ब्रिटेन सहित कई पश्चिमी देशों द्वारा इसको आतंकवादी समूह के रूप में नामित किया गया है, जबकि कई देश इसको एक हथियारबंद समूह मानते हैं जो इस्राइल द्वारा कब्ज़ाए गए फिलिस्तीन की आज़ादी के लिए हिंसात्मक संघर्ष कर रहा है। हमास ने 2006 में फिलिस्तीनियों का आखिरी चुनाव जीता था, और अगले वर्ष वेस्ट बैंक स्थित राष्ट्रपति महमूद अब्बास के प्रतिद्वंद्वी फतह आंदोलन को हटाकर गाज़ा पर नियंत्रण कर लिया था। तब से गाज़ा में हमास और इस्राइल के बीच कई बार संघर्ष हो चुका है। इस्राइल ने मिस्र के साथ मिलकर हमास को अलग-थलग करने और हमलों को रोकने की कोशिश करने के लिए पट्टी पर आंशिक नाकाबंदी बनाए रखी है, विशेष रूप से इस्राइली शहरों की ओर रॉकेटों की अंधाधुंध गोलीबारी। गाज़ा में फिलिस्तीनियों का कहना है कि इस्राइल के प्रतिबंध और घनी आबादी वाले क्षेत्रों पर उसके हवाई हमले सामूहिक सज़ा के समान है।

अगर हम वर्तमान स्थिति के बारे में बात करें तो फिलिस्तीनी हथियारबंद समूह हमास ने 7 अक्टूबर को इस्राइल पर एक अभूतपूर्व हमला किया, जिसमें सैकड़ों बंदूकधारियों ने गाज़ा पट्टी के पास घुसपैठ की। कम से कम 1400 इस्रायली मारे गए हैं, जबकि देश की सेना का कहना है कि महिलाओं और बच्चों सहित 199 सैनिकों और नागरिकों को गाज़ा में बंधक बनाकर रखा गया है। इस्रायली सेना द्वारा गाज़ा के खिलाफ कई हवाई हमलों में 2,700 से अधिक फिलिस्तीनी मारे गए हैं, जबकि इस्राइल ने इस क्षेत्र पर पूरी तरह से नाकाबंदी लगा दी है और इसे भोजन, ईंधन और अन्य आवश्यक चीज़ें देने से इनकार कर दिया है। वह गाज़ा सीमा पर भी अपनी सेनाएं जमा कर रहा है और फिलिस्तीनी खुद को ज़मीनी कार्यवाही के लिए तैयार कर रहे हैं, जिसमें कई और लोगों की जान जा सकती है।

– पारिजात प्रामानिक

XI

मिशन रानीगंज

मिशन रानीगंज 2023, भारतीय हिंदी भाषा की जीवनी पर आधारित आपदा थ्रिलर फिल्म है, जो टीनू सुरेश देसाई द्वारा निर्देशित और पूजा एंटरटेनमेंट और एम्मे एंटरटेनमेंट के बैनर तले वाशु भगनानी, दीपशिखा देशमुख, जैकी भगनानी और निखिल आडवाणी द्वारा निर्मित है। फिल्म में अक्षय कुमार ने एक खनन इंजीनियर जसवन्त सिंह गिल की भूमिका निभाई है, जिन्होंने 1989 में पश्चिम बंगाल के रानीगंज में बाढ़ वाली कोयला खदान में फंसे 65 खनिकों के बचाव अभियान का नेतृत्व किया था। फिल्म में गिल की पत्नी सुरजीत कौर गिल की भूमिका में परिणीति चोपड़ा भी है।

फिल्म गिल की पृष्ठभूमि और उनके काम के प्रति समर्पण के संक्षिप्त परिचय के साथ शुरु होती है। उन्हें खतरे के बावजूद भी अपने कर्तव्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता वाला व्यक्ति दिखाया गया है। इसके बाद फिल्म आपदा के दिन पर आती है, जब अचानक बाढ़ आने से कोयला खदान में पानी भर जाता है और खनिक अंदर फंस जाते हैं।

बचाव अभियान का नेतृत्व करने के लिए गिल को तुरंत बुलाया गया। वह तुरंत स्थिति का आंकलन करता है और फंसे हुए खनिकों तक पहुंचने की योजना तैयार करता है। हालाँकि, बचाव अभियान चुनौतियों से भरा है, क्योंकि खदान पानी और मलबे से भरी हुई है। यह फिल्म भूमिगत फंसे खनिकों द्वारा सामना की जाने वाली क्लस्ट्रोफोबिक और भयावह स्थितियों को व्यक्त करने का उत्कृष्ट काम करती है। तनाव स्पष्ट है क्योंकि बचाव दल खनिकों तक पहुंचने का रास्ता ढूँढ़ने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा है, इससे पहले कि उनकी हवाई आपूर्ति खत्म हो जाए।

गिल के रूप में अक्षय कुमार ने दमदार अभिनय किया है। वह खनिकों को बचाने के लिए चरित्र के दृढ़ संकल्प, साहस और अटूट प्रतिबद्धता को व्यक्त करता है। गिल की पत्नी के रूप में परिणीति चोपड़ा भी प्रभावी है, जो पूरी परीक्षा में अटूट समर्थन प्रदान करती है। फिल्म अच्छी तरह से तैयार की गई है और मनोरंजक है, और यह निश्चित रूप से दर्शकों को अपनी सीटों से बाँधे रखेगी। फिल्म निर्माताओं ने बचाव अभियान के नाटक और भावनाओं को पकड़ने का सराहनीय काम किया है, और फिल्म निश्चित रूप से दर्शकों पर एक अमिट छाप छोड़ेगी।

कुल मिलाकर, मिशन रानीगंज एक अच्छी तरह से बनाई गई और प्रेरणादायक फिल्म है जो निश्चित रूप से आपदा फिल्मों और मानव विजय की कहानियों दोनों के प्रशंसकों को पसंद आएगी।

– प्रखर लोहिया

XI

ई-स्पोर्ट्स का उदय

पिछले दो दशकों में प्रतिस्पर्धी गेमिंग, जिसे आमतौर पर ई-स्पोर्ट्स के रूप में जाना जाता है, ने विशिष्ट उपसंस्कृति से एक वैश्विक घटना में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। वीडियो गेम की दुनिया में जड़े जमा चुका यह उद्योग अब दर्शकों की संख्या और राजस्व के मामले में पारंपरिक खेलों को टक्कर देने वाला बहु-अरब डॉलर का साम्राज्य रखता है। इस संक्षिप्त अन्वेषण में, हम ई-स्पोर्ट्स के उदय पर गहराई से चर्चा करेंगे, इसके विकास, महत्व और इसे वैश्विक स्टारडम के लिए प्रेरित करने वाले प्रमुख कारकों पर प्रकाश डालेंगे।

यात्रा शुरु होती है

ई-स्पोर्ट्स की उत्पत्ति वीडियो, ग्रेमिंग के शुरुआती दिनों से मानी जा सकती है, जिसमें खिलाड़ी अनौपचारिक रूप से एक-दूसरे के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करते थे। हालाँकि, 1990 के दशक में स्ट्रीट फाइटर-II और स्टारक्राफ्ट जैसे शीर्षक एक महत्वपूर्ण मोड़ थे, क्योंकि उन्होंने संगठित प्रतियोगिताओं और एक उत्साही प्रशंसक आधार के उद्भव को बढ़ावा दिया था।

विकास और प्रगति

1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में ई-स्पोर्ट्स टूर्नामेंट और लीग के पैमाने और प्रमुखता में लगातार वृद्धि देखी गई। काउंटर-स्ट्राइक और वॉरक्राफ्ट-III जैसे शीर्षकों ने इस विस्तार में योगदान दिया। लेकिन यह स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म का आगमन और 2000 के दशक के अंत में लीग ऑफ लीजेंड्स और क्वजं 2 जैसे मल्टीप्लेयर बैटल एरेना (MOBA) गेम्स का उदय था, जिसने वास्तव में ई-स्पोर्ट्स को मुख्यधारा में ला दिया।

वैश्विक अपील

ई-स्पोर्ट्स का सबसे उल्लेखनीय पहलू इसकी वैश्विक पहुँच है। पारंपरिक खेलों के विपरीत, ई-स्पोर्ट्स भौगोलिक सीमाओं को पार करता है, जिससे दुनियाभर के प्रशंसकों को जुड़ने और अपने जुनून को साझा करने की अनुमति मिलती है। प्रमुख टूर्नामेंट लाखों समवर्ती ऑनलाइन दर्शकों को आकर्षित कर सकते हैं, और उद्योग एक अरब डॉलर का बाजार बनने की ओर अग्रसर है। ई-स्पोर्ट्स की बढ़ती लोकप्रियता ने प्रमुख प्रायोजकों के साथ साझेदारी की है, जिससे मुख्यधारा में इसकी जगह पक्की हो गई है।

ई-स्पोर्ट्स का भविष्य

चल रही तकनीकी प्रगति के साथ, ई-स्पोर्ट्स का भविष्य अत्यधिक आशाजनक है। आभासी वास्तविकता और संवर्धित वास्तविकता गेमिंग क्षितिज पर है, जो उद्योग के लिए और भी अधिक ऊँचाइयों का वादा करते हैं। एशियाई खेलों जैसे प्रमुख आयोजनों में इसके शामिल होने और ओलंपिक में इसके शामिल होने के बारे में चर्चा के साथ, मुख्यधारा के खेलों में शामिल होने की ई-स्पोर्ट्स की क्षमता स्पष्ट है।

निष्कर्षत:, ई-स्पोर्ट्स का उदय वीडियो गेम की शक्ति और इसके समुदाय के जुनून का प्रमाण है। साधारण शुरुआत से लेकर वैश्विक प्रमुखता तक इस उद्योग की यात्रा से पता चलता है कि यह आने वाले वर्षों तक मनोरंजन और खेल में एक महत्वपूर्ण ताकत बनी रहेगी। ई-स्पोर्ट्स न केवल गेमर्स की नई पीढ़ी को सशक्त बनाता है, बल्कि डिजिटल और भौतिक दुनिया के बीच की खाई को भी पाटता है, गेमिंग की सार्वभौमिक भाषा के माध्यम से विविध पृष्ठभूमि के लोगों को एकजुट करता है।

- पारिजात

XI

नए छात्र की कलम से

7 अप्रैल 2023 जिस दिन मैं वेल्हम में शामिल हुआ। अपने सूटकेस में अपना सारा सामान लेकर, मैं अपने माता-पिता को अलविदा कहने की योजना बना रहा था। उस दिन मेरे पिता ने मुझसे कहा कि अब से उन्हें मेरी पीठ की ओर देखना सीखना होगा क्योंकि यह संकेत देगा कि मैं अपने भविष्य का सामना कर रहा हूँ और एक बेहतर इंसान के रूप में अपना चेहरा देखने का इंतजार कर रहा हूँ। इसी उद्देश्य से मुझे यहाँ भेजा गया है। शुरुआत में चीज़ें बहुत कठिन थीं। मुझे बहुत सारे नियमों का सामना करना पड़ा साथ ही उन चीज़ों को करने का प्रयास करना पड़ा जिनके बारे में मुझे लगता था कि मैं करने के लिए तैयार नहीं हूँ। मैं बिल्कुल गलत था, आज एक पूर्ण वेल्हमाइट के रूप में, मैंने 365 दिनों की बहुत लम्बी यात्रा का अनुभव किया है। वे दिन बिल्कुल भी आसान नहीं थे, लेकिन स्कूल ने मुझे इतना कठोर बना दिया कि मैं उनका दिल से सामना कर सकूं, इतना दयालु कि मैं महसूस कर सकूं और इतना मजबूत कि मैं सह सकूं। मैं अब हर तरह के लोगों के साथ तालमेल बिठा सकता हूँ और दबाव में भी निखर सकता हूँ। मेरे अंदर कई अच्छी चीज़ें विकसित हुई हैं और कई बुरी चीज़ें बाहर भी आई हैं। लोग अब मुझमें ज़िम्मेदारी की झलक देख सकते हैं। मैंने अपना समय का प्रबंधन करने के साथ-साथ उसका सदुपयोग करने की क्षमता भी हासिल कर ली है। मैंने हर किसी का सम्मान करना सीखा है, चाहे वह शिक्षक हों या वरिष्ठ। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि मैंने स्वतंत्र रूप से सीखा है। अगर एक साल मुझे इतना बदल सकता है, तो ज़रा सोचिए कि जब मैं पास हो जाऊँगा तो कितना सफल व्यक्ति बनूँगा। दुनिया बहुत छोटी और मतलबी है, यहाँ जीवित रहना सीखना एक कला है। कुछ लोगों को ऐसा लगता है जैसे डे-स्कूलों और बोर्डिंग स्कूलों के बीच कोई अंतर नहीं है, लेकिन वे बिल्कुल गलत हैं। आप दिल्ली के विशिष्ट डे-स्कूलों में से किसी एक में पढ़ते हुए 100 प्रतिशत अंक प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन बोर्डिंग स्कूलों के बारे में कुछ बिल्कुल अलग है। यहाँ तो तुम आलराउन्डर बनते हो। खेल, सह-पाठ्यचर्या और शिक्षाविदों में उत्कृष्ट। मुझे लगता है कि ये गुण यहीं विकसित हो सकते हैं, कहीं और नहीं। मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला और मैं यहां एक साल बिताने के लिए बहुत आभारी हूँ। मैं अपने सभी साथी वेल्हमाइटस से आग्रह करता हूं कि वे उन्हें मिलने वाले हर एक अवसर का लाभ उठाएं और उनका उपयोग एक सज्जन व्यक्ति बनने के लिए करें जो जानता है कि हम इस दुनिया में कैसे प्रयास करना है और ताकत से ताकत की ओर बढ़ना हैं। इस विद्यालय में मेरा सफर बस शुरु ही हुआ है। आगे भी इस सफर में न जाने कितनी विकट परिस्थितियां एवं समस्याएं आयेंगी, लेकिन मेरे मित्र, अध्यापक व मेरे सीनियर से मिले ज्ञान से मैं यह समझता हूँ कि आखिर ज्ञान मुश्किल परिस्थितियों से ही आता है। उम्मीद है कि मैं भी एक दिन अपने इस सफर को गर्व से देख कर मुस्कुराऊँगा, जैसे मेरे बड़े भाई आज मुस्कुरा रहे हैं।

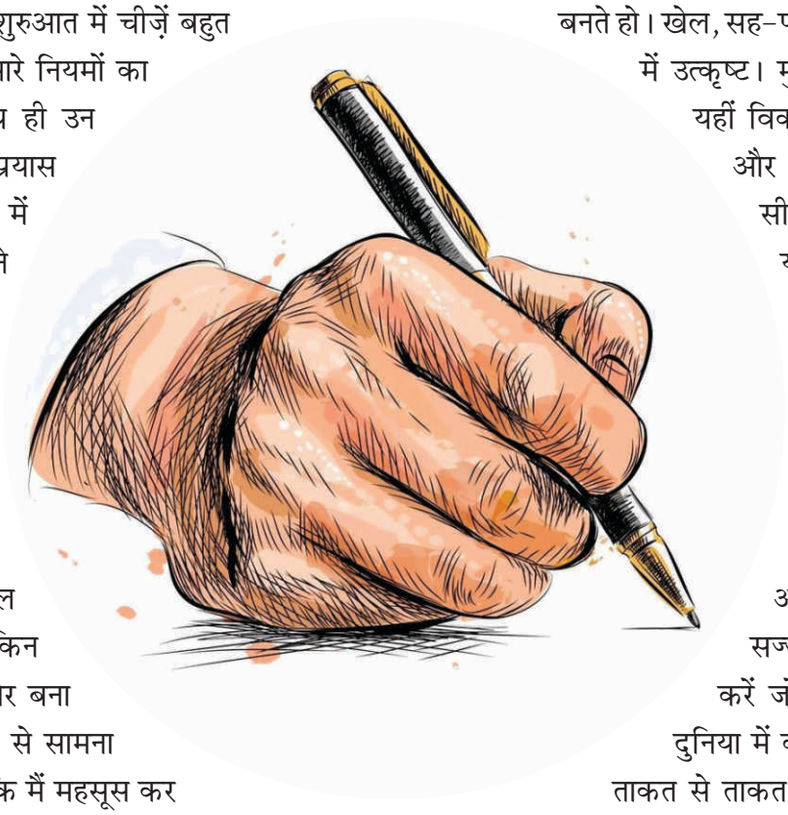

- देवांक कनोड़िया

XII - B

ओलीफैंट के मुख्य संपादक की कलम से

बहुत समय हो गया कि मुझे मौका मिला हो अपनी शायरी या अपने शब्दकोष का अनुवाद हिंदी में कर सकूँ। जब संकल्प के मुख्य संपादक से मेरी बात हुई थी, वह कह रहे थे, कि क्यों न मैं यानि ओलीफैंट का मुख्य संपादक होने के नाते संकल्प के लिए एक लेख लिखूँ। यह बताते हुए कि मैं आखिर महसूस क्या करता हूँ और मेरा नज़रिया आखिर है क्या? मैं मानता हूँ कि अगर आपको एक मौका मिला है, वह भी इंक़लाब का, तो आप उसे कैसे जाने देंगे। मैं अपने साल की शुरुआत से यह सोचता आया हूँ, कि हमेशा कुछ ऐसा करूँ कि कोई सोचे न। शायद मैं हर बार कामयाब न हुआ हूँ, पर मेरी कोशिश और मेरी प्रतिबद्धता ही ऐसी कुछ वजहें है कि आज मैं ज़िंदा हूँ। शायद यह लेख भी एक कोशिश है, ज़िंदा रहने की, या कहे ज़िंदा महसूस करने की। वह ज़िन्दगी क्या जिसमें आप आप न हो, और वह लेख क्या, जिसमें आपकी भावना न हो। ज़िन्दगी मौके बहुत देती है, सही या गलत, मैं नहीं जानता, पर अगर हम वह मौके छोड़ दे, तो वह हमारी खामियां दिखाती है। तो आज मैं भी कुछ सीमाएँ तोड़ कर आपके सामने अपनी बातें रख रहा हूँ।

मैंने अपना मन बना लिया है, जब तक आज मैं यह खत्म नहीं करूंगा, मेरा आराम करना नाजायज़ और बेकार है। मेरा शब्द कोष इतना अच्छा नहीं है, पर बातें रखने और करने को तो सिर्फ दिल की ज़रुरत होती है। सच कहूँ, तो प्यार है मुझे, लिखने से, सोचने से, जानने से, और जीने से। इस घडी पर, मेरा मानना है कि जहाँ इंसान जो महसूस करता है, वह लिख दे तो सिर्फ दिल उसका हल्का नहीं होगा, पर जो काग़ज़ है, वह जल उठेगा। जब हम इतिहास, राजनीति और उनके तथ्यों की बातें करते है, तब उस दिल पर थोड़ा आराम मिल जाता है, पर जब उसी राजनीति पर हमसे हमारी राय पूछी जाए तो जज़्बात अपने आप शब्दों में बाहर आते हैं। मैं चाहता हूँ कि प्रकाशन सिर्फ तथ्य और जागरूकता का प्रदर्शन न बने, बल्कि अपनी दिल की बात और जो वह महसूस करता है, या जो बातें उन्होंने हमेशा अपने अंदर समेट कर रखी है, वह लिखे और दुनिया को बताये कि कागज़ की कीमत या कोई सीमा नहीं होती, बल्कि उसका मोह, और उसके लिए लड़ने की ताकत और हिम्मत होनी चाहिए। अब चाहे वह लेख हिंदी में हो या अंग्रेजी में। यही सन्देश मैं देना चाहता हूँ। आज तीन साल बाद मैंने दोबारा कोशिश की है, कि मैं अपनी मातृभाषा में कुछ शब्द लिखूँ, और हो सके तो कुछ आँखें नम करूँ, पर शायद वह चीज़ हिंदी में लिखते समय मेरे बस मैं नहीं है।

जाने से पहले, मैं कुछ कहना चाहूँगा पूरे स्कूल को। हमेशा यह बात याद रखियेगा कि मतभेद बनाये जाते है, जो हमे मिला है, वह सिर्फ प्यार है, और वह आप किसी भी इंसान, किसी भी भाषा से करें, वह आपकी मर्ज़ी है। ज़रूरी नहीं है कि आपको कोई भाषा आना अनिवार्य है, जहाँ आपका दिल और जहाँ आपकी नैतिकता है, वह सही है। मेरा इस पूरे लेख से बस यह कहना है कि, अपने दिल को हलके में न लो। जो महसूस हो, काग़ज़ आपके सामने है, भाषा आपके पास है, लिखिए, तब तक लिखिए, जब तक आपके दिल को दोबारा लेखनी से प्रेम करने का मन न करे।

अपने दिल की सुनते हुए,

-प्रणय सिंह ढाका

मुख्य संपादक ओलीफेंट

The Olifant
WELHAM BOYS' SCHOOL

भारत का विकास

'विकास' यह एक ऐसा शब्द है जो हर कोई चाहता है। यह एक ऐसा रास्ता है जो हमें उज्जवल भविष्य की तरफ ले जाता है। 'विकास' एक ऐसा तत्व है जो अभी अगर ना होता तो आज यह देश उतना विकसित और सफल ना होता जितना यह आज हैं। एक समय था जब इन्सान पत्थरों से काम करते थे, मानो पत्थर तो उनके जीवन जीने का एक सहारा था। वह पत्थर के हथियार बनाके जानवरों को मारकर खाते तथा पत्थर पर ही सो जाते, फिर धीरे-धीरे समय ने करवट ली। दुनिया में विकास बढ़ा और बढ़ा। विकास के चलते जीवनशैली विकसित तो हुई तथा लोगों को अपने और दुनिया के बारे में पता करने का अवसर भी प्राप्त हुआ। 'विकास' एक बहुत ही महत्वपूर्ण रोल हम सब के जीवन में निभाता है। हर देश अपना विकास चाहता है। ऐसा कौन सा देश होगा जो अपने देश का विकास ना चाहता हो? सारे देशों के विकास की गति तेज़ है पर सबसे ज़्यादा मेरे और बहुतों के हिसाब से भारत के विकास की गति है। हमारे आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की वजह से हमारे भारत ने विकास की बहुत अच्छी गति पकड़ ली है। हमारे प्रधानमंत्री जी ने गरीब बच्चों के लिए पढ़ने की सुविधाएँ देश में प्रदान की। बहुत सारी नई रेल गाड़ियों जैसे बंदे भारत ऐक्सप्रेस को चलाया तथा हमारी सबसे बड़ी सफलता 'चंद्रयान-3' सफलतापूर्वक चाँद पर उतर गया। ऐसे बहुत सारे विकासों की वजह से हमारा भारत और भी विकसित हो गया जो कि एक बहुत अच्छी खबर हैं। हम-भारतीयों के लिए। हमारे देश का आर्थिक सामाजिक और नैतिक विकास हम सबको उन्नति की ओर ले जा रहा है। भारत अपने साथ-साथ दुनिया के और भी गरीब देशों की उन्नति के लिए प्रयासरत है। दुनिया में जब भी कहीं आपदा आती है तो भारत उस आपदा से निपटने में अग्रणी भूमिका निभाता है तथा दुनिया के साथ विकास के रास्ते पर आगे चलने के लिए प्रयासरत हैं।

- आरव बगाड़िया

VIII - D

सत्र के आखिरी दिन आसान नहीं

सत्र के आखिरी दिन आसान नहीं।
मार्चिंग की नियमित परीक्षा देना आसान नहीं।
रात के बारह बजे सोकर,
सुबह पाँच बजे उठना आसान नहीं
गुनगुनी सर्दी में क्रॉस कन्ट्री का
अभ्यास आसान नहीं
अभ्यास के बाद कक्षा के लिए
जाना आसान नहीं
कक्षा में नींद से
दामन बचाना आसान नहीं
अंखियों में भरी नींद को
अध्यापकों से छुपाना आसान नहीं
फोन का प्रयोग किए बिना
रहना आसान नहीं
और छिप-छिपकर स्कूल में
फोन लाना आसान नहीं
स्थापना दिवस की तैयारी में
परीक्षा की तैयारी आसान नहीं
और परीक्षा की तैयारी में
स्थापना दिवस की तैयारी आसान नहीं
जीवन अनुशासन है,
हर पल अनुशासन में रहना आसान नहीं।

- सानिन्ध्य जिंदल

IX-D

क्लबः एक अनोखा अनुभव

क्लब एक के अभिन्न अंग वेल्हमाइट का जीवन वेल्हम, एक ऐसी जगह जहां किसी की संभावनाएं बहुत करीब है, वह आपको ऐसी जगह ले जा सकता है, जिसकी आपने कभी कल्पना भी नहीं की होगी। जांच की गई, इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए, हमारे इन क्लबों का उद्देश्य केवल छात्रों को सह-पाठ्यचर्या गतिविधि आधारित क्लबों की ओर धकेलना नहीं है। ये क्लब न केवल महानता प्रदान करते हैं, बल्कि उन्हें यह एहसास भी दिलाते हैं कि समग्र विद्यार्थी मंच को यह दिखाने के लिए कैसे उपयोग कर सकता है कि उसकी क्षमताओं का कुशलतापूर्वक और उत्पादक रूप से उपयोग किया जा सकता है। आपको यह भी पता चलेगा कि वह कितना बेहतर हो सकता है। लेकिन, यह कहने की भी बहुत अधिक अतिरिक्त प्रयास की आवश्यकता होती है। जिम्मेदारियाँ निभाना सीखें, समस्या तब उत्पन्न होती है, जब अन्य छात्र उनके इस कठिन प्रयास का सम्मान नहीं कर पाते और यह कहकर उन्हें हतोत्साहित कर देते हैं कि वे सिर्फ समय बर्बाद कर रहे हैं। उन्हें यह समझ में नहीं आता कि इन क्लबों में नामांकन कितना फायदेमंद है और इसका छात्रों के व्यक्तित्व पर क्या प्रभाव पड़ सकता है। वे सोचते हैं कि ये क्लब उनके जीवन में तनाव और बोझ लाते हैं और इनसे कुछ भी परिणाम नहीं निकलता है। मेरे साथी वेल्हमाइट्स, कृपया समय रहते इसके महत्व को समझें, ताकि आप और भी बहुत कुछ कर सकें। एक बार अवसर बीत जाने के बाद, आप अपना सिर अपने हाथों में पकड़कर अपने पूर्व स्वयं में अज्ञानता को कोसने के अलावा कुछ नहीं कर सकते। ये क्लब आपके अंदर वह बीज बोते हैं जो आन वाले वर्षों में आपको एक गौरवान्वित वेल्हमाइट के रूप में विकसित करेगा। इस लेख को लिखने का मेरा उद्देश्य उन लोगों को कुछ समझदारी प्रदान करना है जो अपने बैचमेट्स को उनके अतिरिक्त प्रयास और परिश्रम के लिए हतोत्साहित करते हैं। मैं आपको बता दूं कि ये क्लब वे आधार हैं जो आपको एक गौरवान्वित वेल्हमाइट की उपाधि धारण करने के लिए प्रेरित करेंगे। केवल एक लड़का जो असंख्य कार्यों को उचित तरीके से करना जानता है और एक दिन में इतना कुछ करने में सक्षम है, उसे वेल्हमाइट कहा जा सकता है। ईमानदारी से किसी भी क्लब का हिससा बनना चाहिए।

– आर्यन राज

IX-D

उद्देश्य की लौ

हमारा जीवन उन क्षणों में निर्मित होता है जो हमारी पहचान को परिभाषित करते हैं और हमें अपनी बात कहने की नैतिक शक्ति देते हैं। मैं 'कोई नहीं' से 'कोई' तक की इस यात्रा की कथा को समझाने के लिए लौ के रूपक का उपयोग कर रहा हूँ। विज्ञान में, ऊर्जा संरक्षण का सिद्धांत कहता है कि ऊर्जा कभी बनाई नहीं जाती बल्कि एक रूप में दूसरे रूप में स्थानान्तरित की जाती है। इसी प्रकार, यह लौ पदार्थ के अंधेरे आंतरिक भाग से उभरती हुई प्रतीत होती है और उस व्यक्ति को ढालने के लिए आवश्यक गर्मी, गर्मी देना शुरू कर देती है जिसके अंदर वह जलना शुरू कर देती है। इस गृह पर हमारे अपेक्षाकृत कम समय के दौरान, उस परिवर्तन को देखना वास्तव में एक पुरस्कृत अनुभव है जो तब हो सकता है जब हम अपनी क्षमता के आंतरिक भंडार का दोहन करते हैं। जैसे-जैसे हम जीवन के उतार-चढ़ाव से गुजरते हैं, हमारे पास अपनी कहानी को परिभाषित करने की शक्ति होती है, जिससे वह आंतरिक लौ हमारा खुद का सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनने की दिशा में मार्गदर्शन करती है। ऐसे सफर में ये लौ कई रूप लेती है, मुझे प्रसिद्ध मार्शल आर्ट गुरु/संरक्षक ब्रूस ली का दर्शन याद है, जिन्होंने कहा था कि 'पानी की तरह बनो जो दरारों से भी अपना रास्ता बनाता है।' दृढ़ मत बनो, बल्कि वस्तु के साथ तालमेल बिठाओ, और तुम्हें इसके चारों ओर या इसके माध्यम से एक रास्ता मिल जाएगा।

परिचय की अपेक्षा से मैं जो कहना चाहता हूं उसकी रूपरेखा तय हो गई है। हममें से कुछ लोगों में यह लौ लक्ष्य निर्धारित करने और उस तक पहुंचने के जुनून के रूप में उभरती है। जैसे-जैसे हम अपनी शक्तियों के बारे में अंतर्दृष्टि विकसित करते हैं और अपनी सोच में वस्तुनिष्ट होते जाते हैं, लक्ष्य स्पष्ट होता जाता है। हालांकि, हममें से कुछ में यह ईर्ष्या की ज्वाला, अपराध की ज्वाला में बदल जाती है जो व्यक्ति को जलाकर राख कर देने की हद तक अंदर ही अंदर जलती रहती है। हमारी क्षमताओं की बाहरी मान्यता प्रेरित करने के लिए अच्छी है, लेकिन यह उन लाभों के लिए नैतिक दिशा-निर्देश प्रदान नहीं करती है, जो व्यक्ति को मिलने लगते हैं। सच्ची भावना स्वयं के प्रति प्रतिबद्धता में निहित है जो लौ को सही डिग्री तक उबलने देती है। व्यक्ति को लॉ को सही दिशा देने में सावधानी बरतने की जरूरत है क्योंकि नकारात्मक भावनाओं से प्रेरित होने पर लौ जलकर नष्ट हो जाती है। उन सीमित शब्दों में मैंने अपनी सीमित हिंदी शब्दावली को इस बात को पुष्ट करने की कोशिश की है कि आंतरिक लौ हमेशा जलती रहे। लेकिन जलती हुई लौ को एक और मोमबत्ती जलाने दें ताकि हम धीरे-धीरे हमारे सामने आने वाले अंधेरे को दूर कर सकें। यात्रा के लिए शुभकामनाएँ।

मुझे उभरने दो
इस अँधेरे से
मेरे पास विश्वास है जो मुझमें प्रकाश लाता है
इस अवसर पर जागने की लौ मेरे अंदर है
मैं एकांत के इस सफर का मुसाफिर हूं
बहादुर दिमाग और साहसी हृदय से मुझे मानवीय असुरक्षा की चोटियों पर विजय
प्राप्त करने दीजिए
तब मैं विश्राम करूंगा और कहूंगा कि मैं भी जीया।

- आर. श्रीकांत
हेड ऑफ स्टूडैंट डेवलेपमेंट
एच.ओ.डी.-गणित

विद्यालय की राजनीति

राजनीति एक नाटक का कभी न खत्म होने वाला एपिसोड है, जहाँ कक्षा हमारे युद्ध के मैदान हैं, और बेथनी हमारी संसद है। हम सिर्फ छात्र नहीं हैं, हम महत्वाकांक्षी राजनेता हैं, पेपर बॉल की लड़ाई, गुप्त गठबंधन और टक शॉप व्यापार वार्ता के युद्धक्षेत्र में। यहीं पर हम जीवन के आरंभ में सीखते हैं कि राजनीति कभी-कभी गणित के होमवर्क जितनी ही पेचीदा हो सकती है।

स्कूल कैप्टन पूरे संस्थान के मुखिया, छात्र साम्राज्य के सम्राट की तरह होता है। उनके पास बेथनी में मेन्यु बदलने की शक्ति है। यह ऐसा है जैसे उनके पास राज्य की चाबियाँ हैं, लेकिन राज्य विद्यालय है। हो सकता है कि वे दुनिया पर राज न करें, लेकिन सुबह की सभा के दौरान वे निश्चित रूप से ऐसा ही व्यवहार करते हैं, जो छात्र अगले कप्तान बनने के लिए लड़ते हैं वे सामान्य से अधिक उदार होते हैं।

कोई नहीं जानता कि अगला कप्तान कौन बनेगा? क्या वह व्यक्ति तैरकर पोजीशन तक पहुंचेगा या अपने बॉस्केटबॉल को स्कूल पोजीशन की रिंग में ऊँचा करेगा, या पत्रिका में कप्तान बनाने के तरीकों की अपनी स्क्रिप्ट प्रकाशित करेगा। इसके बारे में हमें अगले टर्म में ही पता चलेगा।

स्पोर्ट्स के कैप्टन, स्कूल के सच्चे सिपाही ही हैं जो खेल के मैदान पर उन सभी अंतर स्कूल प्रतियोगिताओं में जीत के लिए हमारे स्कूल का झंडा लहराते हैं। इस पद पर आसीन होने वाले अगले व्यक्ति का अनुमान लगाना थोड़ा कठिन है। आप कभी नहीं जानते कि कोई व्यक्ति तेजी से दौड़ेगा या अपनी हॉकी स्टिक उछालेगा या फुटबॉल उछालेगा या क्रिकेट की गेंद की तरह स्टंप को उखाड़ देगा।

चुनाव जीतने वाले लोग बैठेंगे हाई टेबल पर। वे घोषणाएँ करेंगे और भोजन के बाद हम सब का नेतृत्व करेंगे। उन्हें विशेष ब्लेज़र और चमकदार बैज मिलेंगे, साथ ही एक विरासत टाई, जो वो बड़े चाव से वेलमुन एम एच एस पे पहन के घूमेंगे।

– केशव भाटिया

X-A

आशाओं की पतंग

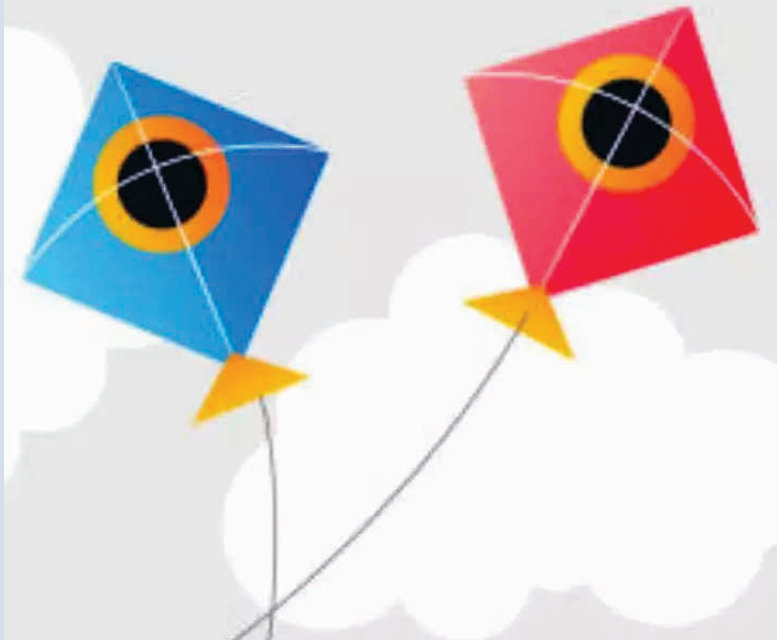

आसमान को छू कर, आशाओं की पतंगे लौट आती हैं,
दिल छूने वाली कुछ बाते वह कह जाती है।
दुख के सागर में, भूल मत जाना,
कोशिश करने एक बार फिर आना।

जो होता है, अच्छे के लिए होता है,
भूल जाओ क्या है फूल, मन लगाओ कर्म में,
जो पसंद आए वे करो, छोड़ दो तुम हो किस धर्म में।
अमिट कर्म ही धर्म है, यही तो गीता का मर्म है।

हार मत देखो, ध्यान दो सुख पर
है तुम्हारे पास माता-पिता और एक घर
जीवन चल रहा है, और क्या चाहिए?
दिल घबराए, तो बोलो, 'यहाँ सब सही हैं'

हमेशा जीत कर, हार कैसे सीखोगे?
आगे चलकर, दुख कैसे पहचानोगे
कभी न मानो हार, आँख बंद करा ले एक नाम
बोलो 'जय श्री राम'

– ईशान तिवारी

VIII

ॐ समस्त सत्य के संवाहक-ईश्वर

आप सभी ने मोतियों की मालाएँ तो देखी ही होंगी। पूरा संसार मालाओं को उनके मोती-शृंगार के कारण पहचानता है परंतु इन सबको बाँधने वाले धागे को श्रेय कभी नहीं दिया जाता। कुछ इसी तरह सभी दृश्य वस्तुओं को बाँधने वाले स्वयं हमारे अदृश्य ईश्वर हैं। चाहे वे हमें किसी भी रूप में दिखते न हों। समस्त संसार के एकलौते दाता हैं।

जहाँ ज़्यादातर लोग 'भगवान' को एक सम्पूर्ण शब्द समझते हैं। मेरे विचार में 'भगवान' शब्द का जन्म 'भगवान' शब्द से हुआ है जिसका अर्थ उसके वर्णों में मिलता है।

भ = भूमि ग = गगन

व = वायू अ = अग्नि और न = नीर

कबीर ने अपने दोहों में कहा है कि –

कस्तूरी कुण्डलि
बसै, मृग ढूँढे बन
माहि।
ऐसी घटी-घटी राम है,
दुनिया देखे नाही।।

इसी दोहे के तात्पर्य कुछ ऐसा है कि चाहे हमें ईश्वर किसी विशिष्ट रूप में न दिखाई देते हों, न हमारे जीवन में प्रयुक्त साधारण वस्तुओं के माध्यम से भी हमें दर्शन देते हैं।

जैसा कि मैंने आप सभी को कुछ देर पहले बताया, ईश्वर हर एक दृश्य और अदृश्य वस्तुओं को एक साथ बाँधकर रखते हैं और इसका वर्णन श्रीमद् भगवद गीता में भी किया गया है।

श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा 'हे पार्थ समस्त संसार मुझ पर टिका है। जैसे एक धागे पर मोती।'

परंतु सबसे अनोखी बात यह है कि जबकि भगवान हमारे अन्वेषक हैं, वे तब भी हमारे समक्ष प्रकट नहीं होते। यही पर मैं कबीर द्वारा कथित एक श्लोक का वर्णन करना चाहूँगा।

सुखिया सब संसार है, खायै अरु सोवै।
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवै।।

इस साखी में कबीर ने भगवान को पाने का एक तरीका बताया है-साधना। केवल हृदय से की गई साधना और सच्चे मन की मानसिक गतिविधियों से ही ईश्वर प्राप्ति संभव है।

मैं इस चीज़ की उम्मीद करूँगा कि आप सब लोग इस विषय पर विचार करें और सोचे कि आप भगवान को अपनी ख़्वाहिशें पूरी करने के लिए पूजते हैं। या फिर उन चीज़ों का शुकराना करने के लिए जो स्वयं भगवान ने आपको दी।

– अमन दीवान

VIII -D

मोटोजीपी : रफ्तार का रोमांच

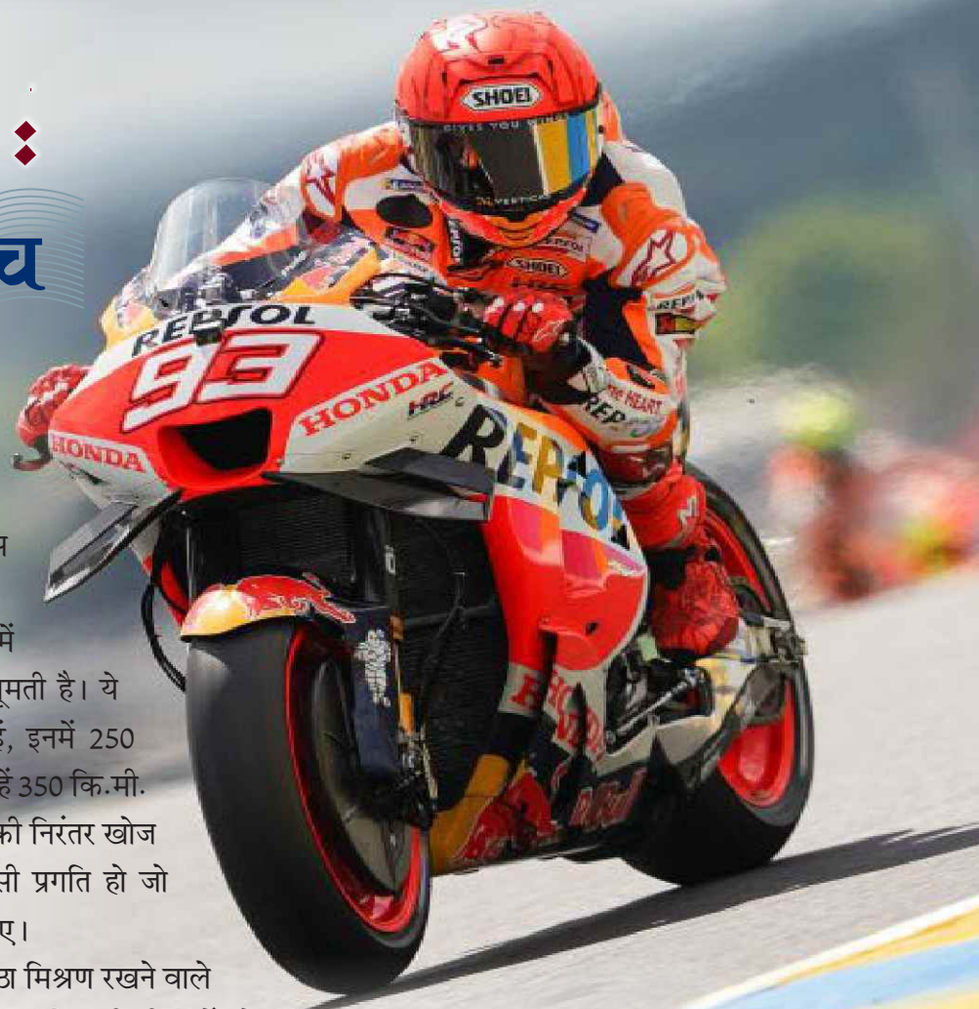

मोटोजीपी, मोटरसाइकिल रेसिंग का प्रमुख वर्ग, एक रोमांचक तमाशा है जो दुनिया भर के प्रशंसकों को मंत्रगुग्ध कर देता है। अत्याधुनिक तकनीक, साहसी सवारों और तीव्र प्रतिस्पर्धा के साथ, यह सबसे रोमांचक मोटरस्पोर्टस आयोजनों में से एक है।

मोटोजीपी का दिल बारीक ट्यून की गई मशीनों में निहित है जो आश्चर्यजनिक गति से सड़कों पर घूमती है। ये मोटर साइकिलें इंजीनियरिंग प्रतिभा का प्रमाण हैं, इनमें 250 हॉर्सपॉवर से अधिक की क्षमता वाले इंजन हैं, जो उन्हें 350 कि.मी./घंटा से अधिक की गति तक ले जाते हैं। नवाचार की निरंतर खोज यह सुनिश्चित करती है कि प्रत्येक सीजन में ऐसी प्रगति हो जो दो-पहिया रेसिंग में संभव की सीमाओं को आगे बढ़ाए।

कौशल, साहस और सामरिक कौशल का एक अनूठा मिश्रण रखने वाले सवार स्वयं एक अलग नस्ल के होते हैं। वे मानव सहनशक्ति की सीमाओं को चुनौती देने वाली जी-बलों का अनुभव करते हुए, विश्वासघाती मोड़ो को नेविगेट करते हैं, सटीक ओवरटेक निष्पादित करते हैं और विभाजित दूसरे निर्णय लेने का प्रदर्शन करते हैं। वैलेटिनो रॉसी, मार्क मार्केज और जॉर्ज आइकन ने अपनी असाधारण प्रतिभा से मोटोजीपी इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है।

मोटोजीपी की वैश्विक अपील इसके विविध कैलेंडर में स्पष्ट है, जो महाद्वीपों और संस्कृतियों तक फैला हुआ है। यूरोप के ऐतिहासिक सर्किट से लेकर एशिया और अमेरिका के अत्याधुनिक ट्रैक तक, प्रत्येक स्थल अपनी चुनौतियों और माहौल लेकर आता है। चैंपियनशिप अंतर्राष्ट्रीय प्रतिभा का सच्चा प्रदर्शन है, जो दुनिया भर से राइडर्स और प्रशंसकों को आकर्षित करती है।

मोटोजीपी रेस का ड्रामा और अप्रत्याशितता ही प्रशंसकों को उनकी सीटों से बांधे रखती है। एक दौड़ का निर्णय बाल की चौड़ाई से किया जा सकता है, जिसमें पलक झपकते ही स्थिति बदल जाती है। मौसम की स्थिति टायर प्रबंधन और रणनीतिक पिट स्टॉप जैसे कारक जटिलता की एक अतिरिक्त परत जोड़ते हैं, जिससे प्रत्येक दौड़ कौशल और रणनीति का एक अनूठा आख्यान बन जाती है।

हालांकि मोटोजीपी इसके खतरों से रहित नहीं है। खेल की उच्च गति प्रकृति का मतलब है कि सवारों को हर बार ट्रैक पर जाने पर महत्वपूर्ण जोखिमों का सामना करना पड़ता है। उन्नत हेलमेट, सुरक्षात्मक गियर और कड़े नियम जैसे सुरक्षा उपाय, इन जोखिमों को कम करने और सवारों की भलाई सुनिश्चित करने से सर्वोपरि हैं।

अंत में मोटोजीपी अत्याधुनिक तकनीक, असाधारण एथलेटिकिज्म और रोमांचक प्रतिस्पर्धा का एक मंत्रमुग्ध कर देने वाला मिश्रण है। यह एक ऐसा खेल है जो मानवीय और तकनीकी उपलब्धि की सीमाओं को पार करता है और अपनी गहनता से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देता है। जैसा कि राइडर्स और इंजीनियर जो संभव है उसकी सीमाओं को आगे बढ़ाना जारी रखते हैं, मोटोजीपी मानव प्रयास की अदम्य भावना का एक प्रमाण बना हुआ है।

- वेदांश जायसवाल

XI

युद्ध समस्याओं का समाधान नहीं

'युद्ध मानव गतिविधि का एकमात्र रूप है जहां दो व्यक्ति मिल सकते हैं, जिनमें से कोई भी एक-दूसरे से नफरत नहीं करता या यहां तक कि एक-दूसरे को जानता भी नहीं है, और एक-दूसरे को देखते ही मार डालते हैं।'

– जॉर्ज ऑरवेल

'युद्ध', एक ऐसी क्रिया है जिसमें लोग, राज्य या देश कुछ पाने या दिखाने के लिए एक-दूसरे से लड़ते हैं, बिना यह समझे कि वे वास्तव में जो हासिल कर रहे हैं उससे कहीं अधिक खो रहे हैं। इस्राइल-फिलिस्तीन संघर्ष का वर्तमान मुद्दा इस प्रकार के परिदृश्य का एक उदाहरण है। संघर्ष की जड़ ब्रिटिश शासनादेश के दौरान शुरू हुई। यूरोप से आप्रवासन के कारण फिलिस्तीन में यहूदी आबादी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। यह इससे यहूदी और अरब आबादी के बीच तनाव बढ़ गया। 1947 में, संयुक्त राष्ट्र ने फिलिस्तीन को दो राज्यों, एक यहूदी और एक अरब, में विभाजित करने के लिए मतदान किया। संयुक्त राष्ट्र ने संकल्प 181 को अपनाया, जिसे विभाजन योजना के रूप में जाना जाता है, जिसमें फिलिस्तीन के ब्रिटिश जनादेश को अरब और यहूदी राज्यों में विभाजित करने की मांग की गई थी। विभाजन वोट के तुरंत बाद 1948 का अरब-इस्राइल युद्ध छिड़ गया। युद्ध के परिणामस्वरूप अरब सेनाओं की हार हुई और इस्राइल राज्य की स्थापना हुई। युद्ध के दौरान लाखों फिलिस्तीनी अपने घर छोड़ने पर मजबूर हो गए, शरणार्थी बन रहे हैं, इन सिलसिलेवार घटनाओं के बाद दोनों समुदायों के बीच लगातार संघर्ष शुरू हो गया।

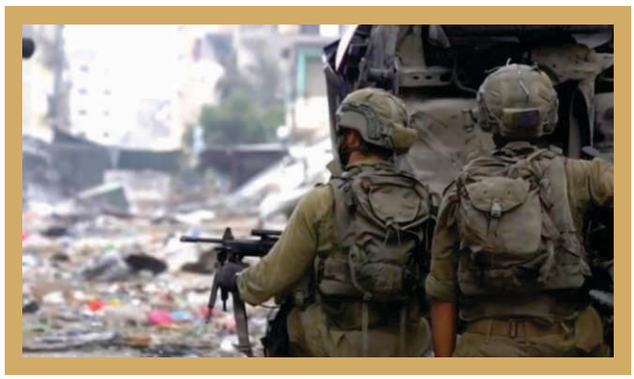

वर्तमान इस्राइल-फिलिस्तीन संघर्ष की शुरुआत 7 अक्टूबर 2023 को हुई जब यहूदियों के एक बहुत ही पवित्र त्यौहार सिमचट तोराह के दौरान 'हमास' नामक एक हथियारबंद समूह द्वारा 5000 रॉकेट दागे गए। इस त्यौहार के दौरान यहूदी अपने सबसे पवित्र ग्रंथों में से एक को पढ़ते हैं टोरा कहा जाता है। इस दुर्भाग्य के बाद इस्राइली या फिलिस्तीनी लोगों में से कोई भी पीछे हटने और चल रही घटनाओं को रोकने के लिए तैयार नहीं था, क्योंकि इंसानों को जवाब देने की आदत होती है, न कि केवल उपलब्धि को स्वीकार करने की।

भारत पर इसका प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है। आर्थिक रूप से इस्राइल-फिलिस्तीन संघर्ष का भारत की अर्थव्यवस्था पर भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। भातर के इस्राइल और अरब जगत दोनों के साथ बड़े व्यापारिक संबंध हैं। इस संघर्ष ने भारत और क्षेत्र के बीच व्यापार को बाधित कर दिया है और इससे भारतीय कंपनियों के लिए क्षेत्र में काम करना भी मुश्किल हो गया है। इसके अलावा, संघर्ष के कारण तेल की कीमतों में वृद्धि हुई है। इसका भारतीय अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है, क्योंकि भारत एक तेल का प्रमुख आयातक, साथ ही इस्राइल-फिलिस्तीन संघर्ष हमेशा से भारत के लिए एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। भारत ने परंपरागत रूप से इस्राइल और अरब दुनिया दोनों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखा है। हालाँकि, संघर्ष ने भारत के लिए तटस्थ स्थिति बनाए रखना मुश्किल बना दिया है।

लंबे समय से चले आ रहे इस संघर्ष का समाधान संघर्ष के मुख्य मुद्दों को संबोधित करना है। इसमें यरूशलम की स्थिति, फिलिस्तीनी शरणार्थियों के लिए वापसी का अधिकार और भविष्य के फिलिस्तीनी राज्य की सीमाएँ शामिल हैं। साथ ही इस्राइल और फिलिस्तीनियों के बीच सीधी बातचीत कराना भी, दोनों पक्षों को मेज पर आकर परस्पर सहमति वाले समाधान पर बातचीत करने की जरूरत है।

निष्कर्षत:, इस संघर्ष का प्रभाव केवल एक परिणाम तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके कई व्यापक और विनाशकारी प्रभाव हैं और न केवल इस्राइल और फिलिस्तीन पर बल्कि दुनिया के अन्य हिस्सों पर भी। दुनिया को इस मुद्दे पर एक साथ आकर इस संघर्ष को शांतिपूर्वक हल करना चाहिए और ऐसे युद्ध को रोकना चाहिए जिसका हमें भविष्य में पछतावा हो।

'सबसे बड़ी जीत वह है जिसके लिए किसी युद्ध की आवश्यकता नहीं होती।' – अज्ञात

– विनायक राज

IX - A

पलों की बात

अवसर तो सभी को मिलता है
परंतु कमल ही सबसे ज़्यादा खिलता है
आगे हर कोई नहीं बढ़ता है
सही राह पर हर कोई नहीं चलता है।

जीवित रहने के लिए आवश्यक है नीर
गिरकर खड़ा होने वाला है असली वीर
मुश्किले आती हैं राह में
हौंसले बुलंद रखो चाह में।
वक्त वापस नहीं आएगा
कोई न कोई ज़िंदगी से हमारी जाएगा
काश! कोई मेहनत ही नहीं करनी पड़ती
पूरी दुनिया घर पर ही रहती।
कुछ चीज़े सपने ही रह जाएँगे
वर्ष पलों में ही बीत जाएँगे
कुछ करना है तो वक़्त नहीं
जीवन इतना भी सख्त नहीं।

– अद्विक रस्तोगी
XII

अगली वोटिंग

दो हज़ार तेइस है बीतने वाला
क्या बारहवीं का बैज है पावर में आने वाला
सबने निकाल ली है म्यान से अपनी तलवार
इलेक्शन में नहीं चाहिए किसी को हार।

मित्रता में पड़ेगी दरारें
रूठेंगे एक-दूसरे से सारे
वोट तो डालेंगे सब एक-एक
दिल टूटेंगे अनेक।

जरूरी नहीं जीतना
हाउस को है अपने सबको जिताना
जीतने के लिए कोई न ले गलत राह
जीतने की है सबकी चाह।

– हर्षित अग्रवाल
IX-D

विज्ञापनों से भरी दुनिया

'विज्ञापन देता उत्पादों का ज्ञान।
प्रसिद्ध बनाना कार्य महान।।'

वर्तमान समय विज्ञापन युग के रूप में जाना जाता है। विज्ञापनों की मदद से ही उत्पादक अपने सामान का प्रचार करके लाभ उठाते हैं। विज्ञापन इतने मददगार होते हैं कि कम गुणवत्ता वाले उत्पाद भी बड़ी आसानी से बाजार में बिकते नज़र आते हैं। हमारे जीवन में विज्ञापनों का इतना प्रभाव है कि यह ही तय करते हैं कि हम क्या पहने, क्या खाएं, नमक वाला या बिना नमक टूथपेस्ट इस्तेमाल करे। हमें कहीं न कहीं पर विज्ञापनों से की लुभावनी की की लुभावनी भाषा के जादू से बच पाना बहुत मुश्किल होता है। इसके लिए अपने विवेक का प्रयोग करना आवश्यक है। आज हर वस्तु एक दूसरे का विज्ञापन बन गई है। टी.वी. खरीदों तो प्रेस मुफ्त। दोनों का ही विज्ञापन हो गया। एक तो खाद्य तेलों, मिर्च-मसाले आदि की तो जैसे बाढ़ लगी है और इसकी अंधी दौड़ में हमें अपने तन मन और विवेक से काम लेना होगा।

– यश अग्रवाल
IX - D

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया आज कल के जमाने में सबसे ज़्यादा चलने वाली चीज़ है। आज कल ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो सोशल मीडिया नहीं चलाता। वैसे तो आप जानते ही होंगे कि यह क्या है पर फिर भी मैं इसका मतलब आपको बताता हूँ। सोशल मीडिया से आप पूरी दुनिया से बात कर सकते हो चाहे वो आपके घर के पास रहता हो या कोसो दूर। वैसे तो आज कल बहुत सारे सोशल मीडिया ऐप्स हैं और काफी और बन भी रहे हैं। इनमें से कुछ हैं इंस्टाग्राम, फेसबुक, वॉट्सऐप, ट्वीटर आदि।

यह हमारे लिए अच्छा है क्योंकि यह हमें दूर के लोगों से मिलवाता है और इससे हमें बहुत सारी जानकारी भी मिलती है। यह हमारी 'डेली यूज़' की तरह बन चुकी हैं। यह दिन प्रति दिन अच्छी होती जा रही है और जहाँ कुछ अच्छा हो वहाँ बुरा होना भी तो जरूरी है।

यह हम सब लोगों के लिए बुरा भी साबित होता है। इससे हमारी आँखें खराब होती है और इसमें गंदी गंदी चीज़े भी होती है। इसमें बहुत धूर्त लोग भी मिलते जो हमारे ऐकाउन्टस हैक भी कर सकते है। वह हमें कई बार ब्लैकमेल भी करते है। वैसे तो हमें हमारे भविष्य में सोशल मीडिया की जरूरत पड़ेगी और यह हमारे दिलों पर भी राज करेगा और जैसे मैंने बताया कि यह अच्छा भी हो सकता है यह आप पर निर्भर है चाहे आप इसे पॉजीटिव तरीके में ले या नेगेटिव।

– यश अग्रवाल

IX-D

छात्रों की पसंद देश या विदेश

आज कल हम देखते हैं कि भारत के बच्चे विदेश जाकर अपनी आगे की पढ़ाई करना चाहते हैं। क्या हम अन्य देशों के लिए महान छात्र बना रहे हैं, यह उन्हें अपने से ऊपर उठने में मदद कर रहे हैं? इस विषय पर अगर बात की जाए तो ऐसे कई सारे सवाल हमारे दिमाग को छू जाते हैं।

सबसे पहले तो हम बात करेंगे कि क्या आजकल बच्चे विदेश जाकर पढ़ने में ज्यादा आकर्षित हो रहे हैं? यह सवाल बहुत ही महत्वपूर्ण है। आज के समय में विदेश जाकर पढ़ना भारत के बच्चों के लिए आम बात हो गई है। क्या इसका कोई कारण है? हाँ है, विदेश में शिक्षा का स्तर बेहद ऊँचा है और वहाँ के कॉलेजों में बेहतर अवसर मिलते हैं। इसके अलावा, विदेश में पढ़ने से बच्चों के व्यक्तिगत विकास को भी बढ़ावा मिलता है। अब यहाँ बैठे-बैठे तो हम अन्य देश की बढ़ाई कर सकते हैं, परंतु सवाल यह उठता है कि क्या हम अपने देश के लिए कुछ कर सकते हैं? आइये पहले इस बात पर वार्तालाप करते हैं कि क्या हम अपने महान छात्रों को दे रहे हैं? शायद हाँ, क्योंकि बाहर जाकर काम करना उनकी वापस भारत आने की संभावना बहुत कम कर देते है। सोचने की बात ये है कि क्या हम इन्हें न खोकर भारत में ही अच्छे अवसर दे सकते हैं। मेरी राय में हमें अपने देश का समर्थन देना चाहिए। भारत को अपने छात्रों को अच्छे अवसर और शिक्षा प्रदान करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि हम यह सब करते हैं तो वे यहाँ अपना योगदान दे सकेंगे और हमारे देश को भी तरक्की की ओर ले जायेंगे।

अंत में, मैं कहना चाहूँगा कि यह सच है कि विदेश जाकर पढ़ाई करने में अपना फायदा है, लेकिन हमें अपने देश को आगे बढ़ाना है। अगर भारत के बच्चे इस देश को बेहतर बनाएं तभी विदेश की तरह यहाँ भी छात्र आकर पढ़ना चाहेंगे।

– ईशान तिवारी

VIII -C

फॉर्मूला वन

वह खेल जो रेसिंग के शिखर के रूप में राज करता है, वह खेल जो अपनी महिमा में, दुनिया में सबसे ज़्यादा देखे जाने वाले खेलों में से एक है, और सबसे घातकों में से एक माना जाता है, फॉर्मूला वन को दुनिया भर में लाखों लोग पसंद करते हैं। यह सबसे तेज़ गति वाले खेलों में से एक है जो अपनी शक्तिशाली गति और रोमांचकारी कटओर से अपने प्रशंसकों को मोहित करता है। फॉर्मूला वन के केन्द्र में ग्रांड प्रिक्स है जो दुनियाभर के प्रसिद्ध ट्रैकों पर होने वाली दौड़ो की एक श्रृंखला है।

ग्रांड प्रिक्स दौड़ की एक प्रतियोगिता है जिसमें रेसर विश्व चैंपियन बनने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। ये दौड़े अलग-अलग देशों में आयोजित की जाती हैं, जिनमें से प्रत्येक की अलग-अलग विशेषताएं होती हैं।

F-1 ड्राइवर बनना कोई बच्चों का खेल नहीं है। F-1 ड्राइवर के रूप में योग्य होने के लिए असाधारण प्रतिभा, समय, अच्छे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य और कुशाग्रता की आवश्यकता होती है। हालाँकि फार्मूला-1 एथलीट बनने के लिए आवश्यक कई विशेषताओं में से कुछ हैं। यह ठीक ही कहा गया है कि 'अभ्यास मनुष्य को पूर्ण बनाता है' और इस मामले में इसमें कोई संदेह नहीं है। चरम शारीरिक स्थिति में रहते हुए अभ्यास करने और कौशल में महारत हासिल करने में अनगिनत घंटे बिताने के लिए अत्यधिक समर्पण की आवश्यकता होती है।

फार्मूला-1 में सेकंड-विभाजित निर्णय जीत और हार के बीच अंतर पैदा कर सकते हैं। ड्राइवरों का प्रतिक्रिया समय महत्वपूर्ण है, क्योंकि उन्हें बदलती परिस्थितियों और अप्रत्याशित बाधाओं पर तेजी से प्रतिक्रिया करने की आवश्यकता होती है। चूंकि कारें 200 मील प्रति घंटे से अधिक की गति तक पहुंचती हैं, देरी से प्रतिक्रिया करने से दुर्घटनाएं और नुकसान हो सकता है।

अगर हम फॉर्मूला-1 की सबसे सफल टीम की बात करें तो वह फेरारी है। कई विश्व चैंपियनशिप और माइकल शुमाकर जैसे प्रतिष्ठित ड्राइवरों के साथ स्कंडेरिया फेरारी टीम के पास खेल में एक समृद्ध विरासत है। उनकी प्रतिष्ठित लाल कारें ट्रैक पर शक्ति और जुनून का प्रतीक हैं।

इस खेल के जीवित किवंदती के बारे में बात करनी है तो इसमें कोई संदेह नहीं है कि वह लुईस हैमिल्टन हैं। 7 बार के विश्व चैंपियन, हैमिल्टन की सफलता का प्रमाण है। वह अपने 8वें विश्व चैंपियन खिताब की तलाश में हैं। जिसका बचाव वर्तमान में विश्व ड्राइवरों के चैंपियन मैक्स वेरस्टैपेन द्वारा किया जा रहा है।

फॉर्मूला-1 कार उत्पादन की लागत की बात करें ते यह एक महंगा प्रयास है। ये हाई-टेक मशीनों अधिकतम गति और प्रदर्शन के लिए डिजाइन की गई है। F-1 कार के विकास और निर्माण में अत्याधुनिक तकनीक, विशेष सामग्री और इंजीनियरों की एक समर्पित टीम शामिल है। एक सीजन के लिए लागत करोड़ों डॉलर तक पहुंच सकती है।

निष्कर्षत: फॉर्मूला-1 केवल एक खेल नहीं है। यह गति, सटीकता और अत्याधुनिक और पूर्व विजेताओं को उनके असाधारण कौशल के लिए माना जाता है। F-1 ड्राइवरों को कठोर प्रशिक्षण से गुज़रना पड़ता है और प्रतिक्रिया समय बिजली की तेजी से होती है, जबकि फेरारी और मर्सिडीज जैसी टीमों ने खेल के इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी है। F-1 कार बनाने की लागत चौंका देने वाली है, लेकिन परिणाम वास्तव में विस्मयकारी हैं। सीज़न की नई कारों, उत्साही प्रशंसक, आधार और तीव्र प्रतिद्वंद्विता के साथ, फॉर्मूला-1 दुनिया को मोहित करना जारी रखता है और उत्साह और उत्कृष्टता की इसकी विरासत कायम है।

- आशीष रंजन

XII

एशियन गेम्स

एशियन गेम्स में भारत का अभियान खत्म हो चुका है। भारत ने एशियन गेम्स में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। एशियन गेम्स 2023 में भारतीय खिलाड़ियों ने 107 मेडल जीते। दरअसल एशियन गेम्स के इतिहास में पहली बार भारत ने 100 पदकों का आंकड़ा पार किया है। भारत ने 28 गोल्ड के अलावा 38 सिल्वर और 41 ब्रॉन्ज मेडल जीते। हालांकि भारत मेडल तालिका में चौथे नंबर पर रहा। चीन मेडल में टॉपर रहा। इसके बाद दूसरे और तीसरे नंबर पर क्रमश: जापान और साउथ कोरिया रहा। और तो और इस एशियन गेम्स में भारत के तरफ से कई नई चेहरे थे जैसे पारुल चौधरी, राम बाबू आदि।

पारुल चौधरी ने 5000 मीटर दौड़ जीती। पारुल अंतिम लौग में जापान की रिरिका हिरोनाका से पीछे चल रही थीं, लेकिन अंतिम 40 मीटर में उन्हें पछाड़कर 15 मिनट 14.75 सेकंड के समय के साथ स्वर्ण पदक जीता। उन्होंने सोमवार को महिला 3000 मीटर स्टीपलचेज में भी रजत पदक जीता था। राम बाबू ने पैदल चाल में राष्ट्रीय रिकार्ड तोड़ दिया और एशियन में कांस्य पदक जीता वह वेटरं थे।

इस सब से हमें यह समझना चाहिए कि हम पर सब कुछ है फिर भी हम कुछ नहीं करना चाहते और एक पारुल चौधरी और राम बाबू जैसे लोग हैं जिनके पास कुछ नहीं था और आज वे लोग देश का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

– केशव मित्तल

VIII -B

न हो परेशान आगे की सोच-सोच कर

ज़िंदगी, ज़िंदगी एक साँप-सीढ़ी के खेल की तरह है। जिसमें उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। पर अगर आप कुछ बड़ा करने की नहीं सोचोगे तो कैसे पाओगे। जैसे आप परीक्षा देने गये और समय कम है तो आप क्या करोगे। परेशान होंगे और सोचने लगो कि समय खत्म हो गया है तो क्या होगा और और अपने काम पर ध्यान दोगे न कि समय पर। हम लोग यही धोखा खा जाते हैं और सोचते रह जाते हैं। यह सोच हमारे किसी कार्य की असफलता, दबाव और मस्तिष्क की बीमारियों का महत्वपूर्ण कारण बन सकती है। आखिर क्यों होना परेशान आगे का सोच-सोच कर जब परिणाम आपके लिए उस परिश्रम व करने के ढंग पर निर्भर करता है, न कि सोचने पर। माना कि आगे का सोचकर प्लान बनाना अपनी मंज़िल तक पहुँचने के लिए एक अच्छा रास्ता हो सकता है पर ज़्यादा सोचने से आपके पास कार्य करने का समय निकट आ जाता है और कुछ फायदा नहीं होता। सोचिए अगर आप कोई खेल खेलने वाले हो और आप दूसरी टीम को देखकर सोच लेते हो कि आप हार ही जाओगे तो क्या आप खेलने से इंकार कर दोगे और डरकर बैठ जाओगे न कि खेलकर जीतने का प्रयत्न करोगे और दिखा दोगे कि हारकर जीतने वालों को बाज़ीगर कहते हैं।

- सामर्थ बंसल

VIII - C

क्या बच्चों पर पढ़ाई का बोझ बढ़ता जा रहा है?

वाकई यह बात सच है कि आजकल बच्चों पर पढ़ाई का बोझ बढ़ता जा रहा है। माता-पिता भी उनसे बहुत उम्मीदें रखता हैं। इससे वे अपना बचपन भूलते जा रहे हैं। आठवीं हो नौवी हो या दसवीं हो इन तीन कक्षाओं से बच्चों पर पेरेंट्स पढ़ाई के बोझ के साथ भविष्य में उनके करियर का भी बोझ डाल देते हैं। बच्चे भी अपनी रूचियों को भूलकर माता-पिता के दबाव में करियर का चुनाव कर लेते हैं। इसी दबाव की वजह से आजकल के छात्रों में भी एंग्जायटी डिप्रेशन एवं मेन्टल ट्रामा जैसी गंभीर मनोवैज्ञानिक समस्याएं तेज़ी से बढ़ रही हैं। ऐसी परेशानियों की वजह से हर माता-पिता से यह गुजारिश है कि अपने बच्चों की रूचि को ढंग से समझे और उन पर हर एक स्थान पर नंबर वन बने रहने का दबाव न डालें। उन्हें अपनी पसंद का करियर स्वयं ही चुनने दे। आप माने या न माने अपनी रुचि / मनपसंद वाली चीज़ करके वह नंबर वन अपने आप ही बन जाएंगे। आजकल के पढ़ाई का तरीका ऐसा है कि उन्हें इतने कठिन प्रोजेक्ट्स और होमवर्क दिए जाते हैं, जो पेरेंट्स को ही पूरा करना पड़ता है। ऐसी शिक्षा का क्या फायदा जो बचपन से ही बच्चों के मन में पढ़ाई के प्रति अरुचि पैदा कर दे। इस समस्या से बचने के लिए पढ़ाई को जरा सा रोचक बनाने की जरूरत है। समय के साथ एजुकेशन सिस्टम में भी बदलाव लाना जरूरी है। पुराने समय की तुलना में अभी के स्कूल जाने वाले छात्रों की संख्या बढ़ी है। पेरेंटस को एक और बात समझने की जरूरत है कि बच्चों के लिए परीक्षा देना तो एक बहुत जरूरी चीज है। मगर वही सब कुछ नहीं है। पेरेंट्स का इतना बोझ कुछ लड़के सह नहीं पाते और आत्महत्या करने का कदम उठा लेते हैं। आत्महत्या रेट्स काफी हद तक इन सब चीज़ों के कारण ही बढ़ जाती है। मगर कुछ बच्चे महान होते हैं, जैसे कि चैस एक ग्यारह साल का बच्चा भी चैस का ग्रैंडमास्टर बन सकता है। बस बात होती है धीरज और बच्चों की रूचियों का साथ देने की। जितना एक बच्चे की रूचि पूरी करने के लिए पेरेंट्स होंगे उतना ही छात्रों को मोटीवेशन मिलता रहेगा। कुछ करना या कुछ बनने का और एक बड़ा आदमी बनने का। तो मैं सारे बच्चों से यह कहना चाहूँगा कि अपने सपने को जकड़े रहो और उसी को लेकर आगे बढ़ो फिर देखना सफलता तुम्हारे पास खुद आएगी। और माता-पिता से भी मेरी एक गुजारिश है कि अपने बालकों पर बोझ न डालें क्योंकि वे अपनी ही पसंदीदा चीज में वक़्त रहते-रहते कुछ कर दिखाएंगे। सबका वक़्त आता है चाहे वो बुरा वक्त हो या अच्छा वक्त। तुम्हें हर एक परिस्थिती को हँसते-खेलते निकाल देना चाहिए और धीरज रखें क्योंकि सफलता आप तक एक दिन जरूर आएगी।

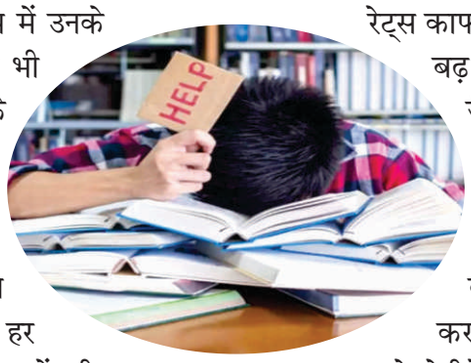

- अर्नभ अग्रवाल

VIII -A

Movie Review

12वीं फेल मूवी रिव्यू

12वीं फेल एक हिंदी भाषा की ड्रामा फिल्म है, जो विधु विनोद चोपड़ा द्वारा निर्देशित और लिखित है। यह अनुराग पाठक के इसी नाम के उपन्यास पर आधारित है। फिल्म में विक्रांतमैसी, मेधा शंकर, संजय विश्नोई और हरीश खन्ना ने अभिनय किया है। फिल्म को 27 अक्टूबर 2023 को भारत और दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज किया गया था।

फिल्म की कहानी मनीष (विक्रांत मैसी) के ईद-गिद्र घूमती है, जो एक 12वीं पास युवक है। वह अपने छोटे शहर के बाहर निकलकर कुछ बड़ा करना चाहता था, लेंकिन उसके पास कोई डिग्री नहीं है। वह मुंबई आता है और एक कॉल सेंटर में नौकरी कर लेता है। वहाँ उसकी मुलाकात मेधा से होती है, जो एक कॉलेज की छात्रा है। दोनों को एक-दूसरे से प्यार हो जाता है। लेकिन मनीष की कम शिक्षा उनकी राह में एक बड़ी बाधा बन जाती है। यह फिल्म समाज में शिक्षा के महत्व को उजागर करती है। यह दिखाती ह कि कैसे एक कम शिक्षित व्यक्ति को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। फिल्म में यह भी दिखाया गया है कि कैसे शिक्षा लोगों को अपने सपनों को पूरा करने में मदद करती है।

फिल्म का निर्देशन और सिनेमैटोग्राफी भी बहुत अच्छी है। विधु विनोद चोपड़ा ने कहानी को बहुत ही खूबसूरती से पर्दे पर उतारा है। फिल्म के गाने भी बहुत अच्छे हैं। कुल मिलाकर 12वीं फेल एक बहुत ही अच्छी फिल्म है। यह एक ऐसी फिल्म है जो सभी को देखनी चाहिए। यह एक ऐसी मूवी है जो आपको सोचने पर मजबूर कर देगी और आपको यह एहसास कराएगी कि शिक्षा कितनी महत्वपूर्ण है।

रेटिंग : 4.3/5

– **तन्मय गर्ग**

IX-D

अगले साल किसकी सरकार?

साल 2024 में भारत में आम चुनाव होने वाले हैं और सभी पार्टियाँ चुनावी तैयारियों में जुट गई हैं। जनता के मन में भी यह सवाल उठ रहा है कि अगले साल किसकी सरकार बनने जा रही है?

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पिछले दो आम चुनावों में जीत चुकी है और वर्तमान में केंद्र में उसकी सरकार है। हालांकि भाजपा को हाल ही में हुए कुछ विधानसभा चुनावों में हार का सामना करना पड़ा है। इससे यह सवाल उठने लगा है कि भाजपा का वर्चस्व कम हो रहा है।

कांग्रेस पार्टी भारत की सबसे पुरानी पार्टी है और लंबे समय तक देश पर शासन किया है। हालांकि पिछले कुछ चुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन खराब रहा है। अब यह पार्टी अपनी खोई हुई ज़मीन नहीं पा रही है।

आम आदमी पार्टी (आप) और तृणमूल कांग्रेस (टी एम सी) जैसी क्षेत्रीय पार्टियाँ भी उभर कर सामने आई हैं और राष्ट्रीय स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराने का प्रयास कर रही है।

अगले साल किसकी सरकार बनने जा रही है, यह कहना मुश्किल है। चुनाव के नतीजे कई कारकों पर निर्भर करेंगे, जैसे कि आर्थिक स्थिति, किसानों की समस्याएँ और राष्ट्रीय सुरक्षा।

चुनाव से पहले सभी पार्टियाँ अपने चुनावी घोषणापत्र जारी करेंगी, जिसमें वे जनता से वादे करेंगे। जनता को यह ध्यान देना चाहिए कि कौन सी पार्टी सिर्फ लुभावने वादे कर रही है। जनता को यह भी ध्यान देना चाहिए कि किस पार्टी के पास देश को चलाने की क्षमता है। अगले साल होने वाले आम चुनाव में भारत के भविष्य का फैसला होगा। इसलिए यह जरूरी है कि सभी मतदाता अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करें और सोच समझकर वोट दे।

अब देखते हैं किसके हाथ आती है सत्ता।

– नील सागर वशिष्ठ

IX

देश का नाम : भारत या इंडिया

भारत अंग्रेजों के राज से 1947 में आज़ाद हुआ। अंग्रेज भारत से अनगित वस्तु ले गए, परंतु अपनी एक चीज़ यही छोड़ गए, वह थी 'अंग्रेजी भाषा'। उस दिन से आज तक अंग्रेजी भाषा और हिंदी भाषा में ऐसी प्रतियोगिता शुरु हो गई जो अभी तक समाप्त नहीं हुई है।

अंग्रेजों के जाने के बाद कुछ वर्ष बाद भारत में हिंदी भाषा को राज भाषा घोषित कर दिया। लोगों ने हिंदी को अपनी राज भाषा के तौर पर बड़ी खुशी से स्वीकार करा। अंग्रेज़ अपनी भाषा छोड़ तो गए लेकिन उसे प्रयोग में लाना न सिखाया। जैसे-जैसे समय बढ़ा और दुनिया में अंग्रेज़ी का प्रचलन बढ़ा, भारत को भी अंग्रेजी को अपनाना पड़ा। शुरू में लगा कि अंग्रेज़ी हिंदी की जगह न ले पाएगी पर जैसे समय गया, लोगों के सोच-विचार बदल गया। आज के समय में लोग हिंदी को भूल गए हैं और कई कार्य अंग्रेज़ी में हो रहे हैं।

लोग समझते हैं कि अंग्रेज़ी भाषा न आने से उनका आत्म सम्मान गिर जाता है। लोगों का नज़रिया ऐसा हो गया है कि पब्लिक प्लेस में हिंदी में बोलते हुए वह झिझकते हैं। भारत में अंग्रेजों के जाने के बाद कई बदलाव आए। कुछ अच्छे कुछ बुरे। कुछ छोटे और कुछ बड़े। पर यह अभी भी सही से पता नहीं चला कि 'हिंदी का भारत या अंग्रेज़ों का इंडिया?'

– मुस्तुफा अज़ीम

IX-D

गरीब किसानों से बातचीत के बाद मेरे विचार

एक वंचित परिवार से मेरी गहरी मुलाकात हुई। उनका मासिक वेतन 6000 और रु. 90000 था जब मैंने उनकी छत के नीचे प्रवेश किया तो मैंने पहली बार समाज में अस्थिरता और विभाजन देखा।

इन किसानों को संभालना चुनौतीपूर्ण था। उनके घर का बहुत सारा भाग खराब और अव्यवस्थित था। उस गांव में बहुत सारी सुविधाएँ उपलब्ध नहीं थी। उनके यहाँ स्वच्छता का बिल्कुल ध्यान नहीं रखा गया है। उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ा। वहीं दूसरी तरफ मैं यहाँ हर दिन बिना किसी चिंता के भोजन करता था। वहीं उनके पास उसकी कमी थी। मुझे उनकी रोज की दिनचर्या की तुलना अपनी दिनचर्या से करने पर लगा की मेरे पास आवश्यक सुविधायें भी और उनके पास ऐसा न होने के साथ वह अशिक्षित भी थे और वह अनेक खतरों से जूझ रहे थे।

कविता

मिट्टी से मिट्टी मिले,
खो के सभी निशान
किसमें कितना कौन है,
कैसे हो पहचान।
सब की पूजा, एक सी,
अलग-अलग हो रीत
मस्जिद जाए मौलवी,
कोयल गाए गीत।
नदिया सीचें खेत को,
तोता कुतरे आम
सूरज ठेकेदार-सा,
सबको बांटे काम।।

- स्वराज सोमनाथ
X-D

आसमान के ऊपर भारत का नाम

भारत का साइकल से चाँद तक का सफर आज भी सब लोग अपने दिलों में रखते हैं। आज भारत चाँद के साउथ पोल की सतह पर सफलतापूर्वक रोवर को उतारने में पहला देश बन गया है। भारत के उस मिशन का नाम 'चंद्रयान-3' रखा गया था। इसमें भारत ने 600 करोड़ रुपए लगाए थे। 24 अगस्त को यह मिशन पूरी तरह सफल घोषित हो गया। भारतीय साइंटिस्ट्स की लगन और मेहनत सफल हो गई और उसे देखते हुए भारत ने एक और मिशन, सूरज पर अध्ययन करने के लिए लाँच किया। इस मिशन का नाम 'आदित्य-एल 1' रखा गया था। इन दोनों मिशनों के बाद भारत ने एक और मिशन लाँच किया जो एक टेस्ट मिशन था। वह भारत के आने वाला मिशन 'गगनयान मिशन' के लिए कुछ सेनसटस टेस्ट करने के लिए बनाया गया था। गगनयान मिशन भारत का पहला मिशन है, जिसमें भारत खुद के दम पर मानव को चाँद पर भेज रहे हैं। इतिहास में भी भारतीय लोग स्पेस में गए हैं पर खुद भारत के दम पर नहीं बल्कि अमरीका, रूस, चीन जैसे देशों की मदद से गए हैं। यह मिशन 2024 में उड़ान भरेगा और इतिहास बनाएगा। इस साल 2023 में भारत ने तीन मिशन लाँच करे है जो सफल हुए हैं। यह अपने-आप में भारत के लिए बहुत बड़ी बात है। हम सब भारतीयों को गर्व होना चाहिए कि हमारा देश 'भारत' जो 200 से ज़्यादा साल अंग्रेजों की गुलामी में रहा है, आज स्पेस में इतनी उन्नति कर रहा है कि कई सारे देशों को पीछे छोड़ रहा है। जय हिंद जय भारत!

- युवराज गुप्ता
IX-D

(यात्रा वृत्तान्त 'देवभूमि की सैर' एवं 'बादलों के ऊपर' का समापन भाग)

तालों में नैनीताल.....

तालों में नैनीताल, बाकी सब तलैया.... हिंदी फिल्म का ये मशहूर गीत नैनीताल की वादियों में रची इस खूबसूरत, सुरम्य, अल्हड़, बलखाती, असंख्य जीव-जंतुओं को अपने आँचल में समेटे और पर्यटकों के दिलों को सुकून देती पहाड़ी नगरी की इस झील की रंगीनियत को खूबसूरती से बयाँ करता है या यूँ कहें तो प्रकृति के इन्द्रधनुषी रंगों को चहुँ ओर बिखेरता है। ..... वैसे भी आज की सुबह बहुत ही खूबसूरत, ताजगी भरी और नवजीवन से भरपूर थी जब हम सब ने पंगूट में पक्षियों के कलरव और पहाड़ियों के बीच से झाँकते सूरज की तपिश का अहसास किया था। प्रकति की गोद में सबेरा स्फूर्तिवान, आनंददाई और सुरमई होता है। आकाश की लालिमा के बीच उगते हुए सूरज को प्रणाम कर, इधर-उधर चहलकदमी करते हुए परिंदों के गान के बीच हमारे कदम भी अपने परिंदों के घोंसलों की और चले। अपने परिंदों को सुबह के सूरज से मिला और उन्हें तैयार होकर भोजन-कक्ष में आने के लिए कह हम भी अपने कक्ष में आ गए।

आज हमें नैनीताल की वादियों की सैर करनी थी। जायकेदार नाश्ते के बाद हम सब अपने-अपने वाहनों में सवार हो पहाड़ की ऊँची-नीची और टेढ़ी-मेढ़ी सड़कों पर उड़ने लगे। ऊँचे-ऊँचे पर्वत, आकाशगामी, हरे-भरे वृक्ष हमें लुभाने लगे। नैनीताल के रास्ते में ही हम किलबरी पक्षी अभयारण्य में रुके। यह पक्षी अभयारण्य नैनीताल शहर से लगभग 15 किलोमीटर दूर है। यहाँ वन विभाग ने नैनादेवी जलकुंड नामकी एक मनोरम कृत्रिम झील बनाई है। झील के किनारे ही महर्षि वाल्मीकि से जुड़ी प्रसिद्ध कथा को सुंदर मूर्तिकला द्वारा दर्शाया गया है तथा पास ही उनके मुख से निकला श्लोक लिखा हुआ है। महर्षि वाल्मीकि आदिकाव्य 'रामायण' के रचयिता हैं। कहा जाता है कि एक बार महर्षि वाल्मीकि तमसा नदी के किनारे विचरण कर रहे थे। तभी वहाँ एक हृदयविदारक घटना घटी जिससे उनका हृदय, एक व्याध द्वारा क्रीड़ारत क्रौंच युगल में से एक के मार दिये जाने पर उसकी सहचरी के विलाप को सुनकर द्रवित हो गया तथा उनके मुख से श्राप के रूप में जो वाणी निकली वह श्लोक के रूप में थी। वही श्लोक लौकिक संस्कृत का आदिश्लोक माना जाता है-

मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वतीः समाः।
यत्क्रौंचमिथुनादेकमवधीरू काममोहितम्।।

इस कथा को सुनने-सुनाने, पक्षियों के कलरव तथा झील के आसपास अठखेलियों के बाद हम फिर नैनीताल की और चले। पहाड़ी सुन्दरता हमारा मन मोह रही थी....हमारे वाहन दौड़े जा रहे थे...कि तभी....हिमालय की बर्फाच्छादित चोटियाँ दिखने लगी। हमारे मन की उमंगों को समझते हुए हमारे वाहन वहाँ सड़क किनारे रुक गए और हम शीतल मंद-पवन के झोकों के मध्य इन श्वेतवर्णी हिमाच्छादित उच्च-शिखरों को निहारने तथा इनकी आभा को अपने में समेटने लगे। बहुत से पर्यटक वहाँ दूरबीन के द्वारा हिमाच्छादित उच्च-शिखरों को निहार रहे थे तथा फोटो-शेल्फी ले रहे थे। आनंदानुभूति के कुछ पलों बाद हम फिर नैनीताल की ओर चले। कुछ पलों बाद हमारे वाहन नैनीताल शहर की भीढ़ में खोने लगे और हम एक जगह एकत्र हो इस शहर की आभा निहारने चले। पहाड़ी शैली के बने सुंदर भवन, दुकानें, होटल तथा पर्यटकों की भीड़ से भरे सकरे रास्ते यहाँ की अलग कहानी सुना रहे थे। हमारे साथ-साथ हमारे बच्चें भी प्रफुल्लित हो रहे थे। अब हम सब नैनीताल की प्रसिद्ध झील के पास थे तथा उसकी विशालता और रमणीयता को निहार रहे थे। झीलकी मनोहरता हमारा मन मोह रही थीइसके सौंदर्य को निहारने के साथ शेल्फी और फोटोग्राफी का दौर शुरू हो गया। हम फिर झीलकिनारे मालरोड पर घूमने लगे। पर्यटकों की अठखेलियाँ वातावरण को गुंजित कर रही थी। झील में बहुत सी नौकाएँ हमें अपनी और लुभा रही थी। हमने वहाँ की विभिन्न दुकानों में भी विभिन्न वस्तुएँ देखी।

दोपहर हुई और हमारे पेट में चूहे दौड़ें इससे पहले ही हम मालरोड पर ही 'डोमिनोज' में पिज़्ज़ा खाने पहुँच गए। वहाँ बच्चों ने मनपसंद पिज़्ज़ा स्वाद लिया। अब आसमान से फुहारें छलकने लगी थीं। बारिश की बूंदों ने झील और नैनीताल की कमनीय काया को और भी निखार दिया था। बारिश बंद होने के बाद हम फिर नैनीताल की आभा का आनंद लेने वहाँ की सड़क पर घूमने लगे। घूमते-घूमते हम तिब्बती बाजार पहुँचे। वह बाजार विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से सुसज्जित था। नैनीताल की झील बहुत ही विशाल है तथा वहाँ झील के किनारे ही एक पवित्र और पूज्य गुरुद्वारा है। हमने वहाँ मत्था टेका। वहाँ से आगे बढ़कर हम नैना देवी मंदिर पहुँचे और वहाँ प्रार्थना की। किस्से-कहानियों के अनुसार यह मंदिर कुशाण शासनकाल के दौरान 15वीं शताब्दी में बनाया गया

था तथा एक अन्य कथा बताती है कि इसे मोती राम शाह द्वारा बनवाया गया था। हालाँकि सर्वमान्य तथ्य यह है कि 1880 के भूस्खलन के दौरान यह मंदिर नष्ट हो गया था और फिर इसे पुनर्निर्मित किया गया। मंदिर नैनी झील के उत्तरी किनारे पर सुरम्य और पवित्र है। हमने मंदिर में पूजा अर्चना की। अब साँझ ढलने की और थी... हम अपने वाहनों की ओर बढ़े और हमारे वाहन पंगूट की ओर दौड़ चले। पंगूट पहुँच हमने अपने आशियाने में विश्राम किया और फिर एक सुरम्य सुबह...आज की सुबह पंगूट दौरे की आखिरी सुबह थी। हम सबने अब पंगूट को धन्यवाद कर नैनीताल की ओर प्रस्थान किया। हमारे वाहन नैनीताल की और दौड़ चले।

नैनीताल पहुँच वहाँ की आभा को हम फिर निहारने लगे। नैनीताल के मश्वल रोड पर घूमने के बाद हम वहाँ पहाड़ के ऊपर खूबसूरती से बनाए गए प्रसिद्ध और शानदार चिड़ियाघर पहुँच गए। चिड़ियाघर के जीव-जंतुओं को देख बच्चों के चेहरे खिल गए। हमने वहाँ पर नाना प्रकार के जीव जंतु देखे तथा बच्चों के साथ फोटो खिचवाए। चिड़ियाघर घूमने के बाद हम वापस अपने होटेल लौटे। होटल भवन बहुत ही शानदार और पुराना था हमें बताया गया कि वो अंग्रेजों के समय का है। दोपहर के भोजन के बाद हम एक बार फिर नैनीताल की सैर को निकले। हम सब फिर एक बार मॉलरोड पर घूमने लगे और हमने स्मृति चिह्न खरीदे। शाम हो चुकी थी और घूम फिर कर हम अपने होटल लौट आए... फिर हमने जलपान किया। साँझ में कृत्रिम रोशनी में नहाई हुई इस सुनहरी झील-नगरी की आभा को निहारने एक बार फिर मैं बाहर निकला। अब ये नगरी कुछ और ही लग रही थी चारों और चहल-पहल और उल्लास का वातावरण था। दुकानें .... होटल सब सजे हुए थे और टिमटिमाती रोशनी में झील अद्भुत, अनूठी और दिव्य लग रही थी। इस दिव्यता को निहारकर मैं वापस होटल आ गया। हमने रात्रि-भोजन किया और अपने कक्ष में रात्रि विश्राम के लिए आ गए।

सुबह की सुरम्यता ने इस शहर को उदय होते सूरज की किरणों के साथ निहारने का एक बार पुन: मौका दिया। सबह हलकी-हलकी ठण्ड थी और मैं सुबह की सैर के लिए झील किनारे फिर पहुँच गया। सूरज की सुनहरी किरणों में झील सोने सी दमकती लग रही थी। झील में बत्तखें और मछलियाँ खिलखिला रही थीं। झील और उसके आसपास की आभा को निहार....आनंदित हो हमारे कदम होटल की और मुड़े। दैनिक कार्यों से निवृत्त हो हम सबने नाश्ता किया .... और अब विदाई की बेला थी ...हमने देहरादून की और प्रस्थान किया। रास्ते में ऊँचे पहाड़, नदी-नाले-नदियाँ, जंगल, गाँव-शहर पार करते हुए भोजन -जलपान खाते-खिलखिलाते हम साँझ ढलते-ढलते माँ गंगा की शरण में आ चुके थे। माँ गंगा को दूर से ही नमन कर हम रिस्पना की ओर बढ़ चले। सूरज अस्ताचल की ओर दौड़ रहा था और हम रिस्पना की ओर। देहरादून शहर अब पास ही था और आसमान से बूँदे टपकने लगी। रिमझिम फुहारों के साथ देहरादून ने हमारा स्वागत किया... हम पर अपना स्नेह लुटाया। रिस्पना पुल पार कर हमने रिस्पना के तट पर बसे अपने विद्यालय परिसर में प्रवेश किया। हमारे बच्चों ने विद्यालय पहुँचने की खुशी में जोरदार उद्घोष किया। अपने-अपने वाहनों से उतरकर हम-सबने एक-दूसरे को धन्यवाद और शुभकामनाएँ दीं। सुखद, सुरक्षित, मनोहारी, अलौकिक और देवत्त्व को अनुभूत करने वाली पंगूट-किलबरी-नैनीताल की यात्रा के आनंददाई समापन के साथ हमारे कदम अपने पुराने निशानों की ओर चल पड़े।

- बृजेंद्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'

मधुस्मृतियाँ 2023 की

मिलिट्री हिस्ट्री सेमीनार के दौरान प्रधानाचार्या महोदया, उत्तराखण्ड के राज्यपाल ले.ज. गुरुमीत सिंह के साथ राष्ट्रगान गाते हुए।

बैच 2023-2024
अपने आखिरी मिड टर्म पर
सोलन के प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन पर
अपने कुछ यादगार पल बिताते हुए।

वेलमन 2023 में
भाग लेने वाले छात्र,
एक्जीक्यूटिव बोर्ड व अध्यापकगण।

संपादक मंडल

मुख्य संपादक
बिमर्श झा

रचनात्मक संपादक
अद्विक रस्तोगी
केशव अग्रवाल
राघवेंद्र गोविल
आशीष रंजन

उप संपादक
हर्षित अग्रवाल
प्रखर लोहिया
प्रांजल बलूनी
गोकुल भारद्वाज

अध्यापक प्रतिनिधि
श्री एम. डी. जोशी

Published By: **Mrs. Sangeeta Kain, Principal**
Welham Boys' School,
5, Circular Road, Dalanwala, Dehradun 248001, Uttarakhand, India

The views in the Magazine are of the contributors and not necessarily represent the views of the Magazine and School.
Reproduction in whole or in part without permission is strictly prohibited

Copyright: Sankalp, 2023
All Rights Reserved